चौका शतक

वर्तमान पहेली

डॉ उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'

ISBN : 978-93-5281-779-5

1st Edition –sept, 2017
©All rights reserved to Authour

Printed & Design By: Arena Art
Nabagram, Garia Station Road
Kolkata – 700152
Contact:- arenaart2017@gmail.com
Price: Rs 100/-*
(Free for your comments)

डॉ उम्मेदसिंह बैद 'साधक'
आई. एस. बी.एन. : 978-93-5281-779-5

प्रथम संस्करण – सितम्बर, २०१७

© सर्वाधिकार सुरक्षित लेखक
प्रिंटिंग एवं सज्जा : एरिना आर्ट, नवग्राम, गड़िया स्टेशन रोड,
कोलकाता- ७००१५२ ई-मेल – arenaart2017@gmail.com

मूल्य : सौ रुपए मात्र*
समीक्षार्थ निःशुल्क भेंट

समर्पण

मुस्लिम मित्रों और पाकिस्तान को;
काँग्रेस सहित सभी प्रगति विरोधी संस्थाओं को;
जो इन चौका रचनाओं के निमित्त प्रेरक बने।

स्वकथ्य

हाईकू के बाद ताँका और अब यह चौका। सुना है कि यह जापान से आई काव्य विधाएं हैं। सन 2000 में हाइकू सीखा मित्र श्याम खरे से। तब साधक दिल्ली में एकल विद्यालय अभियान में लगा था। श्यामजी की बालसुलभ मस्ती ने मन मोहा। वे जब तब अपने हाईकू सुनाते रहते। सत्रह अक्षरों में 5-7-5, के व्यवस्थित क्रम में तीन पंक्तियों की 'क्षणिका' सी सुखदायी लगी हाईकू; और तत्काल चन्द रचनाएं बनाकर उनकी शाबाशी पाई। कालक्रम में बनी लगभग 500 हाईकू रचनाएं बिना दर्द दिए खो गई।

2016; साधक का स्वश्राद्ध वर्ष; किसी शुभ योग से इक्कीस नए शोधग्रन्थ प्रकाशित किए। इसमें बीसेक शतकीय काव्यसंग्रह भी बने। फेसबुक मित्रों से कुछ नई काव्य विधाएं सीखी। साहित्यकार मित्र श्रीसुरेश चौधरी के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में छन्दशास्त्र को समझने साधने की कोशिश अब भी जारी है। फ़ेसबुक से ही वर्षान्त के दिनों में पाँच पंक्तियों वाला 5-7-5-7-7 अक्षरों से निर्मित 'ताँका' सीखा। सुखद आश्चर्य लगा कि ताँका ग्रुप के सारे सदस्य मिलकर जितने ताँका पोस्ट करते, उससे ज्यादा (कभी दुगुने तिगुने) अकेला साधक पोस्ट कर देता। साथी रचनाकारों का स्वागत भी उनकी भाव शैली सहित अपनी 'ताँका' से करता। ग्रुप एडमिन ने मेरी पोस्टिंग स्वीकारनी ही बन्द कर दी; सहज ही उस ग्रुप से किनारा किया, किन्तु रचनाक्रम जारी रहा। 'ताँका' के तीन चार शतक पूरे हुए।

इसी वर्ष 16 मई को फ़ेसबुक पर ही 'चारू चिन्मय चौका' ग्रुप से परिचय हुआ। यह ताँका की ही विस्तारित शैली है। 5-7-5-7-5-7 ... अन्तिम दो पंक्तियां 7-7 पर रचना शेष होती है। पहले तो थोड़ी हँसी आई, फ़िर सहजभाव से वर्तमान घटनाओं पर अपनी टिपणियां पूरे विस्तार सहित 'चौका' शैली में लिखना शुरु किया। लिखता और अपनी टाईम लाइन पर पोस्ट कर देता। उसके बाद सम्बन्धित ग्रुप में एकाध पंक्ति जोड़कर या सम्पादित करके पोस्ट कर देता हूँ। इस ग्रुप एड्मिन के साथ भी वही अनुभव स्पष्ट हुआ। एड्मिन का

अनुशासन मानकर कुछ दिन उनके वेबोक्त शैली में व्यक्तिगत विशेष संशित रचना भेजी, साधक को पुनः भरपूर उपेक्षा मिली, बचा लिया गया। प्रशंसा सिर चढ़ जाए तो रचनाकार वहीं मोहित होकर अटक जाता है, तो दूसरी ओर उपेक्षा की सजा रचनाकार को आहत करके आगे बढ़ने से रोक देती है। साधक का सौभाग्य है कि प्रशंसा और तिरस्कार दोनों आपस में ही एक दूसरे से लड़कर निष्प्रभावी हो जाते हैं, साधक निर्लिप्त भाव से अपनी यात्रा जारी रख पाता है।

गृहस्थी होने से इस पुस्तक के रचनाकाल में अनेक भावनात्मक आघात बाधक बने, कुछ गंभीर भूलों का फल भी भुगता और लगभग 12-15 दिन लेपटोप से विरत भी रहना पड़ा। 'शतक' पूरा करने की कोई जल्दबाजी मन में नहीं थी, न ही अपनी दिनचर्या में इसके चलते कोई समझौता किया। हाँ, कहने भर को अवसर ढूंढा जाए, तो उल्लेख किया जा सकता है कि गत दो महीनों से सिनेमा देखने का समय नहीं मिला। यह भी उल्लेखनीय है कि इस बीच अपनी पिछली अधूरी रचनाओं पर ज़रा भी ध्यान न दे सका। महाकाव्य धृत्यायन, उपन्यास औत्थान और श्रीमद्भगवद्गीता के सांख्ययोग पर लिखना टल गया। इस 'टलने' का दोषारोपण इस पुस्तक की बजाय साधक की एक विवशता को देना ज्यादा उचित होगा; वर्तमान को पूरा जीने की विवशता। इस 'चौका शतक' की सभी रचनाओं में उसी दिन की किसी घटना का सन्दर्भ जुड़ा है। अतीत या भावी का स्मरण भी वर्तमान बनकर आया है। वर्तमान की महिमा है; मानव सिर्फ़ वर्तमान में ही सहजता से न्यायपूर्वक जी सकता है, भावी या अतीत अधिकतर दगा ही देते हैं; उनमें जीना बनता ही नहीं। मानव जीवन में अतीत हुए इतिहास की स्मृतियां और आने वाले भावी की कल्पना की उपयोगिता मात्र इतनी सी है कि वह वर्तमान के साथ सन्दर्भित होकर मानव को सावधान कर सके। अभ्यासपूर्वक जो पूरी तरह वर्तमान में जीने लगे, उसका अतीत और भावी सब एकसाथ वर्तमान हो जाता है। इस सामान्य निष्कर्ष में काल अपनी दार्शनिक विकरालता से मुक्त हो जाता है, तो 'समय

से पीछे लौटने की' हॉकिंसी फ़ैंटेसी से भी मानव सहज मुक्ति पा जाता है। क्या पता यही 'कालमुक्ति' चिराभिलषित 'भवमुक्ति' हो। 'मुक्ति-पहेली' का एक आयाम यहाँ और भी स्पष्ट होता है – "भव को सामान्य जन 'दूरियों' से ग्रहण करता है। देहान्तर यात्रायें भी दूरी काटने के अर्थ में ली जाती हैं। भूतकाल की अनन्त स्मृतियों और असंभव भावी की कल्पनापूर्ण आपाधापी में वर्तमान तो बिना पहचान दिए ही विदा हो जाता है; दूरियां हर आयाम में सदैव बनी ही रहती हैं। यहाँ अचानक 'कालमुक्ति' के आभास ने 'भवमुक्ति' भी करा दी... सारी दूरियों का मिटना अर्थात 'स्पेस' का बिन्दु में सिमट आना हुआ। स्पेस-काल युति का अन्त!" कोई मित्र स्टीपन हॉकिंस को बताए कि नई गेलेक्सी की खोज में न निकले, यहीं हाजिर हो जानी है समस्त गेलेक्सियां!

इस पुस्तक की सम्पूर्णता पूर्ति में एक और उल्लेखनीय संयोग बना है। आज साधक जैनाचार के कठिन अनशन तप 'आयम्बिल' के बारवें पड़ाव पर है। प्रथम दस दिनों के अनुभव और उपलब्धियों की सूची बनाते हुए ग्यारवीं शाम कल गुरुवार ही मन में संकल्प उठा कि अपनी चार नई पुस्तकों के प्रकाशनोपरान्त ही आयम्बिल तप का समारोप किया जाए। आठ अधूरी किताबों पर काम करना है; उनमें से यह एक किताब सम्पन्न हुई। संभवतः पुनः प्रमाणित हो कि निसर्ग में हर न्यायपूर्ण कामना के पूरा होने की पक्की व्यवस्था है। आगे उत्साह बना हुआ है।

अब रही बात किताब के नामकरण की; तो वर्तमान का दामन थामकर इसे 'वर्तमान पहेली' नाम दे दिया जाय? कैसा लगा, कहिएगा मित्रों।

— साधक के प्रणाम

भादो कृष्णा द्वादशी 2074, शुक्रवार, 18-8-2017

सम्पादकीय

"माटी की यात्रा
माटी में यात्रा
माटी के लिए यात्रा
और माटी ही मंजिल!"

कमाल है साधकजी की शब्द साधना। जापानी 'चौका' शैली में यह शतकीय रचना अपने आपमें दो भिन्न शैली और भिन्न विधाओं के 'शतक' का रोमाँच-सुख देती है। हर काव्य रचना का सन्दर्भ गद्य में लिखा है; इस तरह शताधिक पद्य रचनाओं के साथ लगभग इतने ही गद्य ट्टिपणियों का आनन्द भी मिल जाता है। पाठक आश्चर्य करता है कि गद्य में पद्य की लयात्मकता और पद्य में छन्द की मर्यादा रखते हुए में गद्य जैसा विस्तारित वर्णन कैसे पिरो देते हैं। उपरोक्त चार पंक्तियां गद्य शैली का सन्दर्भ है; जबकि इसकी लयात्मक मिठास पद्य पढने का सुख देती है; पाठक इन शब्दों में अपनापन देखकर इसे बारबार दोहराने का मन रख सकता है।

'वर्तमान पहेली' ग्रन्थ में मात्र अपैल से अगस्त 2017 तक की राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक घटनाक्रम का समग्र पोस्टमार्टम ही पद्यबद्ध कर दिया है। हर रचना के साथ उस दिन का संकेत प्रमाण है कि ये सब आशु रचनाएं हैं।

मोदी-समर्थक होने का ठप्पा देने वाले मित्र जरा 'अर्थनीतियों के साथ श्राद्ध के समीकरण' का यह अकल्पनीय सा वर्णन देखें ... "क्रेडिट कार्ड पर आधारित आर्थिक विकास का पैमाना सेंसेक्स की सुई बन गई है तो

उधार और घाटे की अर्थ-व्यवस्था के दुष्चक्र में जन गण का मृत्यु पर्यन्त त्रास अपरिहार्य है। दुःखी सन्तानें अपने इन पूर्वजों की श्रद्धा कैसे करेगी? श्रद्धा बिना श्राद्ध तो कर्मकाण्ड का बोझा ही होगा।"

साधकजी छोटी-छोटी सी घटनाओं को वैश्विक फ़लक पर भारतीय दर्शन की उदार व्यापकता के साथ देख पाते हैं। बात-बात में दर्शन और विज्ञान को एक ही धरातल पर ले आते हैं। स्थानीय घटनाक्रम के विश्व-व्यापी प्रभाव को देखकर उस घटना के अतीत मूल कारण सहित उसके भावी विस्तार का आंकलन भी अपनी छोटी सी मनोरंजक रचना में भर दिया है कवि ने।

अभी दो दिन पूर्व ही रामरहीम कोर्ट फ़ैसले पर मात्र 15 घंटों में शतकीय रचना करने वाले साधक एकसाथ ऐसी शोधपूर्ण पुस्तक के लिए समय कैसे निकाल लेते हैं, यह भी अलग से शोध का विषय है। मेरे साथ अन्तरंग मित्रता है, मैं उनकी सहज दिनचर्या का कायल हूँ। हर समय वर्तमान के साथ पूरी तरह मस्त रहते हैं, लिखते समय भी गृहस्थी के सारे अवरोधों को निभाते/ झेलते हुए साहित्य साधना सतत जारी रखने में सिद्ध हैं साधकजी। मैं संकोच में हूँ कि कहीं कोई अतिरेकी बात न कह जाऊँ।

यही आशा करता हूँ कि यह साहित्य साधना अपने ईष्ट सुफ़ल प्रदान करे।

सुरेश चौधरी
सम्पादक- उड़ान मासिक
शुक्तिका प्रकाशन

1- गरजा भारत

बोला है हल्ला
मुँह तोड़ जवाब
पाकिस्तान को
तबाह कर दिया
पूरी चौकी को
कर लो घुसपैठ
चोर बन के
ताल ठोक के किया
जान ले विश्व
न सहेंगे आतंक
न रहें अब चुप।

सन्दर्भ – भारत पाक सीमा संघर्ष। सर्जिकल स्ट्राईक के बाद पहला बड़ा प्रहार। आतंक के सामने ताल ठोंक के खड़ा हुआ भारत। स्पष्ट हुआ एक महत्वपूर्ण जीवनसूत्र – 'जो डरा हुआ है, वही डराता है। जो खुद अपने अस्तित्व के प्रति आशंकित है, वही आतंकित करता है।' 16-5-17

सन्दर्भ – तेरापन्थ आचार्य महाश्रमण का बंगाल आगमन। उनका प्रवासस्थल, 'सन्मार्ग' में इसी दिन प्रकाशित 'अमृत वचन' और उसके नीचे पृष्ठ तीन की आपराधिक, अनैतिक और असामाजिक खबरों के साथ नैतिकता का उपदेश?
काल और स्थान से जुड़े यह संयोग में तेरापन्थ सम्बन्धी अतीत, वर्तमान और भावी के अनेक संकेत निहित हैं। स्पेस-काल से जुड़े इन संयोग-संकेतों से ऊपर होने की देहातीत अवस्था आचरण साध्य है; यह तथ्य सामान्य जैन श्रावक भी जानता है, महाश्रमण तो आचार्य हैं; फ़िर उनकी कथनी करनी ऐक्य पर इतने प्रश्न किस भावी का संकेत हैं?

2- योग के प्रयोजन हैं

हर संयोग
प्रयोजन सहित
चाहो तो जानो
आचरण में लाओ
जो भी कहते
करके दिखलाओ
नियम स्पष्ट
नियति से जुड़ा है
क्षणों का योग
बंगाल का संयोग
व्यर्थ न जाते
काल और आकाश
बाँधे सबको
मुक्ति चाहते जन।
लाँघो तो प्रयोजन।

सन्दर्भ – बंगाल में स्थानीय निकायों के चुनाव में तृणमूल कर्मियों का अत्याचार। पुलिस या तो मूक दर्शक, अथवा विरोधी दलों के कर्मियों को गलत आरोपों से गिरफ़्तार करती। हरबार न्यायालय तक कैसे दौड़े सामान्य जन? मीडिया भय से चुप। मुस्लिम गुण्डे कोढ में खाज! 16-5-17

3- पश्चिम बंग

चुनाव परिणाम
कुछ भी आएं
दीदी की जुर्म कथा
प्रकाशित है
जन गण मन में।
पार्टी के गुण्डे
बम बन्दूक लाठी
आतंकी दृश्य
मुस्लिम से बढके
ममता दीदी?
कहाँ गया कानून
सुरक्षाकर्मी
स्व-रक्षा में चिन्तित
खानापूर्ति में
दण्डित आम जन
आतंकित है
रविन्द्र की धरती
मा माटी मानुष भी!

सन्दर्भ – हरियाणा के एक गाँव का हाईस्कूल वर्षों से सीनीयर सैकेण्डरी बनने के लिए स्वीकृत, मगर सरकारी फ़ाइलों में लम्बित। स्कूल की दसवीं तक की छात्राओं ने स्कूल प्रशासन से लेकर मुख्यमन्त्री तक गुहार लगाई। दस-बीस किलोमीटर दूर जाकर आगे की पढाई जारी रखने में गली से शोहदों और परिजनों की स्वीकृति मिलने की दोहरी अड़चन! लड़कियों ने हार न मानी, अनशन पर बैठ गई। शासन प्रशासन की गहरी बेशर्मी भरी नींद आठ दस दिन बाद मीडिया के दखल से टूटी। इस बीच अभिभावक और स्कूल प्रशासन लगातार छात्राओं के साथ डटा रहा। गर्मी और भूख से बेहोश छात्राओं को अस्पताल लाने लेजाने के लिए नियुक्त एम्बुलेंस का बहिष्कार करते हुए अपने दोपहिये वाहनों से कष्टपूर्वक अनशन की सही भावना को जिलाए रखा। मिडिया पर भी अनशनकारी छात्राएं मुखर रहीं, अपनी लड़ाई खुद लड़ी।

4- ये षेटियाँ

शर्मनाक है
रेवाड़ी का संघर्ष
स्कूल के लिए
अनशन करती
खुद बेटियाँ!
दीवाला राजनीति
खोखले वादे
ना करती विश्वास
अब जनता
या तो काम कराओ
या डूब मरो
चूल्लू भर पानी में
मुँह तो न छिपाओ।

सन्दर्भ – मोदी सरकार के तीन वर्ष पूरे हुए। उपलब्धियां गिनाने में मन्त्री मण्डल गद्गदाता हाँफ हाँफ जाता है, मगर तुलना में हरबार काँग्रेस को गरियाना नहीं भूलते! बस, काँग्रेसी प्रवक्ताओं को उकसावा भरी खुराक मिल जाती है और टीवी चैनल्स पर चलती गर्मागर्म बहसों में उलझी जनता उनका टी आर पी बढाती रहती है। मरी खपी काँग्रेस के अन्तिम संस्कार को व्यग्र बेचारा राहुल समझ ही नहीं पाता कि कैसे काँग्रेस पुनर्जीवित हो रही है? भाजपा हैरान होगी कि उसका यह सतत विरोध काँग्रेस के लिए संजीवनी बन रहा है। नियम भूल गए कि संस्थाएं विरोध की खुराक पर ही फलती-फूलती हैं। इस बहस से निरपेक्ष मित्र मोदी लगातार चौके छक्के उड़ाए जा रहे हैं, जैसे विराट धोनी की तरह अकेले ही देश का सारा मैल धोकर इसे फ़िरसे विश्वगुरु और सोने की चिड़िया बनाकर छोड़ेंगे!

5- आड़ोलित जन गण मन

तीन बरस
मोदी सरकार के
पूरे हो गए
उपलब्धि गिनाते
भाजपा नेता
कमियाँ बताते हैं
विरोधी दल
दोनों बढ चढ के
दूसरे पर
आरोप प्रत्यारोप
जन गण का
मन आड़ोलित है
अधिनायक
सतत युद्धरत
विजीगिषु है
दूरदर्शितापूर्ण
हर कदम
बढता ही जा रहा
मंजिल की तरफ़।

संदर्भ - जीटीवी पर 'फतह का फतवा' मन मोह रहा है। तीन तलाकादि विवादास्पद मुद्दों के माध्यम से इस्लाम भारत में आमजन के लिए पहली बार बेपर्दा हो रहा है। देश के चुने हुए मुफ़्ती मुल्लाह बहस में हिस्सा लेते हैं, नाईशा हसन सरीखी विदुषी सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। बहस में कुरान और हदीशों में वर्णित बहुत कीमती सूत्र मिले जो सुचारु परिवार व्यवस्था के लिए किसी भी समाज में लागू किए जा सकते हैं। आज इस्लाम के प्रति विश्वव्यापी घृणा के चलते उन कीमती सूत्रों की घनघोर उपेक्षा हो रही है, विमर्षणीय है।

2-6-17

6- इस्लाम कन्फ़्यूज्ड

विशेषताएं
कुरान हदीश की
विश्वोपयोगी
किन्तु उस वैद्य से
कौन दवा ले
जो है मरणासन्न
अपना रोग
खुद नहीं स्वीकारे
अपनी गल्ती
जो हर्गिज न माने
बुरा शिक्षक
क्या उपदेश देगा?
मुस्लिम मित्र
अलगाव भाव को
छोड़ न पाते
वर्ग विशेष होना
कैसे छोड़ दें?
प्रसिद्ध है जुमला
कन्फ़्यूज्ड इण्डियन?

सन्दर्भ – जी टीवी पर इस्लाम पर बहस के बीच भारतीय संविधान की जानकार एडवोकेट शबनम लोन ने स्वयं को 'कन्फ़्यूज्ड इण्डीयन' बता दिया? हिन्दु कहते ही 'साम्प्रदायिक' समझने वाले सभी को यह विशेष संज्ञा मिल सकती है। सारे संशय स्वयं की 'हिन्दू' पहचान से ऐसे गायब होते हैं जैसे गधे के सिर से सींग!

1-6-17

7- जटिल पूर्वाग्रह

इसी भूमि की
सन्तान हैं मुस्लिम
भयमुक्त हों
पूर्वाग्रह मुक्त हों
तुष्टि की बात
कन्फ़्यूज कर देती
वकीलों को भी
समान व्यवहार
एक कानून
एक ही देशभक्ति
विकास मन्त्र
न कोई मुसल्मान
न हिन्दू जैन
सब हैं हिन्दुस्थानी
पर्याप्त है ना
कन्फ़्यूजन हटाने
पूर्वाग्रह मिटाने!

सन्दर्भ – देश की फ़िजाओं में गूंजती, घर गली मोहल्ले नुक्कड़ पर चलती हिन्दू मुस्लिम चर्चाओं में मुस्लिम का अलगाव भाव स्पष्ट सामने आ जाता है। एकता का आधार बन सकता है यह धरती और इसपर पली पनपी उदार सांस्कृतिक परम्परा। 1-6-17

8- पन्थ या देश?

साफ़ हो गया
अलगाववादी ही
आतंकवादी
सीधा समीकरण
कश्मीर देखो
या दीदी का बंगाल
पूरी दुनियां
निर्विवाद साक्षी है
सिर्फ़ भारत
पन्थ निरपेक्ष क्यों
उदारता में
बार बार पिटता
फरेब खाता
हल नहीं दिखता
अलगाव का
केन्द्र है ग्रन्थ पन्थ
न कि देश ही धर्म।

सन्दर्भ – अभूतपूर्व बात कानों को सुनने को मिल जाती है कि जिन मुसलमानों को काँग्रेस ने 'दामाद' बनाकर रखा, वे मुसलमान ही अभी काँग्रेस को कोसने लगे हैं कि तुष्टीकरण के ठप्पे से मुस्लिम समाज को बदनाम कराया, और विकास कुछ नहीं किया! 'दामाद' की संज्ञा संभवतः इन्दिराजी के पतिदेव 'फ़िरोज खान' के कारण सामने आई, जिन्हें aम्हात्मा गाँधी ने अपने प्रभाव 'विशेष' से न सिर्फ़ मुसल्मान को 'वर्ग विशेष' बनाया, बल्कि हदों से बाहर आकर 'फ़िरोज खान' को फ़िरोज गाँधी बना दिया! सारा कन्फ़्यूजन वहीं से शुरु हो गया, शबनम लोन के 'कन्फ़्यूज्ड इण्डियन' का बीजारोपण किसी गाँधी के द्वारा हुआ, नए गाँधी के लिए हुआ जो अब 'संशायात्मा विनश्यति' तक आ गया।
1-6-17

9- कन्फ़्यूज्ड इण्डियन

शबनम के
कन्फ़्यूज्ड इंडियन
काँग्रेसियों को
भाजपा से बढके
बद बताते
भोग रही काँग्रेस
निज-दुष्कर्म
मुसल्मान काँग्रेस
एक पाले में
पीटें एक-दूजे को
हँसता जन गण।

सन्दर्भ - राजस्थान हाईकोर्ट की अनुशंषा आई कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए। 31-5-17

10- गौ-चर्चा

11-राष्ट्रीय पशु
गौ को माना कोर्टने
इतने से ही
हिन्दू विरोधी जन
हताश हुए
समान अधिकार
हर जन का
उन्हें छोटा करता
वर्ग विशेष
सामान्य कैसे बने?
स्वाद हो न हो
गौ मांस का भक्षण
आहत करे
आम हिन्दुस्थानीको
यही हक तो
आतंकित करता
रक्तपात कराता।

सन्दर्भ - केरल में काँग्रेस कर्मियों ने सरे आम बछड़े को काटकर उसकी मुण्डी कैमरे के सामने घुमाई, आमजन को चिढाया। नृशंषता दण्डनीय, किन्तु इस बढती मानसिक प्रवृति को सही दिशा भी तो देनी होगी।

11- बीफ़ पार्टी

मजा आएगा
सोच कर देखिए
मोदी विरोध
और हिन्दू विरोध
देश विरोध
जन मन विरोध
बनने लगा
नकारते कानून
दर चौराहे
गौकश इतराते
बीफ पार्टियाँ
कैमरे पर करें
वाम मार्गी हैं
ममता मुसलिम
काँग्रेस सपा
दंगे भड़काते हैं
समाज द्रोही
राजनैतिक पापी
धर्म द्रोही हैं
फल तो भोगने हैं
नियम है सृष्टि का।

सन्दर्भ - राजस्थान हाईकोर्ट की अनुशंषा आई कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए। 31-5-17

10- गौ-चर्चा

11-राष्ट्रीय पशु
गौ को माना कोर्टने
इतने से ही
हिन्दू विरोधी जन
हताश हुए
समान अधिकार
हर जन का
उन्हें छोटा करता
वर्ग विशेष
सामान्य कैसे बने?
स्वाद हो न हो
गौ मांस का भक्षण
आहत करे
आम हिन्दुस्थानीको
यही हक तो
आतंकित करता
रक्तपात कराता।

सन्दर्भ – केरल में काँग्रेस कर्मियों ने सरे आम बछड़े को काटकर उसकी मुण्डी कैमरे के सामने घुमाई, आमजन को चिढाया। नृशंषता दण्डनीय, किन्तु इस बढती मानसिक प्रवृति को सही दिशा भी तो देनी होगी।

11- बीफ़ पार्टी

मजा आएगा
सोच कर देखिए
मोदी विरोध
और हिन्दू विरोध
देश विरोध
जन मन विरोध
बनने लगा
नकारते कानून
दर चौराहे
गौकश इतराते
बीफ पार्टियाँ
कैमरे पर करें
वाम मार्गी हैं
ममता मुसलिम
काँग्रेस सपा
दंगे भड़काते हैं
समाज द्रोही
राजनैतिक पापी
धर्म द्रोही हैं
फल तो भोगने हैं
नियम है सृष्टि का।

12 – ये दोस्ती

सन्दर्भ – गत तीन वर्षों में देश-दुनियाँ में अद्भुत मानसिक भावनात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं। भारत का राजनैतिक दृश्य बदला तो सामाजिक समीकरण भी नए रंग ढंग दिखा रहे हैं। भारत की चेतना से निरपेक्ष काँग्रेसी शासन की तुष्टिकरण नीति ने सामाजिक ताने बाने को जर्जर कर दिया। उसे सुधारने की जल्दीबाजी में लगता है कि वस्त्र पूरा ही फट जाएगा? जो दिखता सो लिखता साधक।

31-5-17

खूब संयोग
गलती काँग्रेस की
भोगे मुस्लिम
वह आरोपी
और ये भुक्तभोगी
पुकारा उसे
आवाज यह देता
पिटता वह
दर्द यह सहता
मुद्दई सुस्त
गवाह चुस्त दिखे
वह मुकरे
तब यह बिफरे
तुष्टि के बीज
निकले विषफल
भोगते दोनों
शिकायतें व्यर्थ हैं
कौन हैं ये वो
जानता आम जन
मुस्काता गण मन।

13 – एलोपैथी मुक्त भारत

सन्दर्भ - नोटबन्दी के बाद जन गण की आशा अपेक्षा कामनाओं को जैसे पंख लग गए हैं। जल्दी परिणाम वाली 'एलोपैथी स्टायल' कामना अब एलोपैथी तन्त्र पर भी भारी पड़ रही है। डॉक्टरों पर हमले, अस्पतालों में उपद्रव के बाद दवा दूकानों पर भी अनाप शनाप लूट के आरोप सहित भड़क रहा है जन मानस। अचानक खबर आई कि देशभर में एलोपैथी दूकानों की हड़ताल है, मन हर्षित हुआ।

31-5-17

एलोपैथी की
राष्ट्रीय हड़ताल?
स्वागत योग्य
अब कुछ दिन तो
इस विष से
बचेंगे आम जन
ढूंढ ही लेगा
वैकल्पिक इलाज
निजी रोग का
पीड़ारत आदमी
नोटबन्दी से
जैसे मुद्रा का किया।
फ़िर चलेगी यात्रा
चरैवेति भारत।

सन्दर्भ – कश्मीर प्रकरण पर टीवी में चलती बहसें नित नए तथ्य उद्घाटित करते हैं। इस्लामिक रंग में कश्मीर सीरीया बनने की दिशा में है। अलगाववादी प्रवक्ताओं के बेखौफ चेहरों पर भारतप्रेम के हर प्रस्ताव पर उपहास भरी मुस्कानेंऔर उनके सुर में सुर मिलाते काँग्रेसी प्रवक्ताओं के बोल जैसे गएअ सत्तर वर्षों की दास्तान बता देते हैं। आवश्यकता है कि राजनीतिज्ञों की भाषा बदले, निरपेक्षता आदि परिभाषाएं बदले।

14- यह सीनाजोरी?

गरजता है
इनाम उल नबी
कैमरे पर
भारत विरोध के
ऊँचे स्वर में
साथ ही काँग्रेस के
बेशर्म तर्क
विचलित करते
जन गण को
परिभाषा हो सही
भाषा बदले
जन गण मन के
अधिनायक जागें।

सन्दर्भ – राजनेताओं में जैसे लूट के कीर्तिमान बनाने की होड़ मची हो। काँग्रेस, सपा, बसपा, जयललिता, द्रमुक, अन्नाद्रमुक किस किस का नाम लिया जाए? वामदलों को अपवाद ही कहा जा सकता, क्योंकि भाजपा भी इस दोष से सर्वथा मुक्त नहीं है। राहुल सोनिया भ्रष्टाचार के अपराधी कोर्ट से अर्जी पूर्वक जमानत लेकर घूम रहे हैं; माल्या और दाऊद आदि के उदाहरणों के बावजूद विदेश भाग जाने की सुविधा सहित?

15- कितने धब्बे?

शीर्षस्थ जन
शीर्ष भ्रष्टाचार में
सजा पा रहे
शर्म से सिर झुके
जन गण का
छवि मेरे देश की
तार तार है
बदनुमां धब्बा है
ये राजनेता
स्वच्छता अभियान
यहाँ आवश्यक है।

सन्दर्भ – हिन्दू मानस को चिढाने और भावनात्मक आधात देकर अपने अहँकार को पोषित करते रहने की प्रवृति लिए 'वर्ग विशेष' अपना भारत विरोध जाने अनजाने प्रकट कर देता है। संविधान में इन्दिराजी द्वारा संशोधित नई प्रविष्टि 'धर्म निरपेक्ष' से उपजी वोटराजनीति और उसकी प्रतिश्रुति 'तुष्टीकरण' के दुष्परिणाम भोग रहा है देश! समाधान का दायित्व अधिनायक का है; भले ही मित्र मोदी पहले से अनेक भीषण मोर्चों पर जूझ रहा हो; किन्तु स्मरण रखना होगा कि किसी एक मोर्चे की उपेक्षा से पराजय संभावित है। पुनः पराजित न होना साधक!

16- वर्ग विशेष

राष्ट्रीय पशु
गौ को माना कोर्ट ने
इतने से ही
हिन्दू विरोधी जन
हताश हुए
समान अधिकार
हर जन का
उन्हें छोटा करता
वर्ग विशेष
सामान्य कैसे बने?
स्वाद हो न हो
गौ मांस का भक्षण
आहत करे
आम हिन्दुस्थानीको
यही हक तो
आतंकित करता
रक्तपात कराता।

सन्दर्भ – 'वर्ग विशेष' के 'दामादीय' शान में जरा सी भी गुस्ताखी अनेक राजनीतिक दलों, बुद्धिजीवियों, मीडिया और तथाकथित प्रगतिशील महाजनों को एकसाथ विचलित कर देती है। टीवी और प्रिण्ट मीडिया में 'गंगाजमनी संस्कृति' पर संकट दर्शाते चर्चा आलेख बरस जाते हैं। आम जन भौंचक्का सा ताकता रह जाता है, भ्रम व्यापता है।

30-5-17

17- बके पाप : साथ साथ

ऐसे बन्धे हैं
तुष्टि वाले धागे
मुस्लिम संग
सपा काँग्रेस वाम
और तृमूंका
कि परिभाषा और
मुहावरे भी
बदलने लगे हैं
कि खरबूजा
अकेले न कटता
चाकू के संग
सभी साथ कटते
हर मुद्दे पे
सबके पाप दिखें
सभी खीसें निपोरें।

18- अन्धास्था-परम्परा?

सन्दर्भ - आस्था-परम्परा पर एक चौका।

तर्क न करो
मान लो जैसा कहा
आस्था यही है
विज्ञान नकारती
सत्य हटाती
ज्ञानधारा रोकती
परम्परा से
सतत बल पाती
जन मन को
भय प्रलोभन से
भरमाती है
अंधेरा अज्ञान का
बनाए रखती है।

19 – पूर्वाग्रही जिद

सन्दर्भ – मित्र मोदी की आध्यात्मिक, पवित्र, और पारदर्शी छवि विश्व मानव को वैसे ही आकर्षित करती है जैसे 'गोपीजन को कृष्ण'! दुनियाँ भर में मोदी का उत्साहपूर्ण स्वागत, मोदी के भाषणों का बार बार सुना जाना और हर भाषण में अवसरानुकूल विषय का सांगोपांग संवाद जन मन को वंशी की तान सा मोहित करता है। अजनबी के साथ अपनापन बना लेना और दुश्मन को हतप्रभ कर देना उनको 'चमत्कारी' बनाता है।

मोदी विरोध
पूर्वाग्रही मन की
झूठी जिद है
मुसल्मान काँग्रेस
वामपन्थ हो
माया ममता 'बिन्द
सभी जानते
कि इससे जीतना
असंभव है
हारता अहँकार
यहाँ सेवक
दिलहारा जन को
हर कदम
फूंक फूंक बढता
जय वरता
अब किसमें दम
कौन हराए?
जन गण मन को?
अधिनायक को भी!

सन्दर्भ – पाकिस्तान ने कुलभूषण को भारतीत जासूस बताकर फ़ांसी की सजा सुनाई। भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में अपील की। लम्बे समय बाद हेग में किसी अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे पर बहस चली। सभी ग्यारह न्यायमूर्तियों ने एकमत होकर भारत के पक्ष में निर्णय दिया। वसुधैव कुटुम्बकम् का स्वर सकारात्मक सार्थक दिशा से पुष्ट हुआ।

20- कब तक पाक?

ग्यारह जज
एकमत होकर
सामने आए
सर्वसम्मत न्याय
पाक विरुद्ध
साख पुनः गिरी है
ना-पाक देश
अकेला पड़ गया
सार्थक हुआ
हेग का न्यायालय
विश्व हर्षित
एक ही परिवार
वसुधैव कुटुम्ब।

सन्दर्भ - हेग न्यायालय ने रोकी कुलभूषण की फ़ांसी।...

21 - अटल निश्चयी देश

शक्तिशाली की
होती आई है जीत
फ़िर साबित
सीना छप्पन ईंच
मापोगे कैसे
पैमाना ही न बना
इतना उदार
कांग्रेस शासन में
अपना स्वार्थ
फ़ुर्सत नहीं देता
सोचने की भी
के ये शाश्वत देश
विश्व गुरु है
क्योंकि आत्मजयी है
अमर निश्चयी है।

22 – भारत का विजयरथ

सन्दर्भ – कुलभूषण प्रकरण पर भारत की जीत हुई।

कुलभूषण
नहीं चढेगा फ़ांसी
न्याय जीतेगा
मुकदमा चलेगा
भारतीय को
काऊंस्लर मिलेगा
माथा ऊँचा है
हर भारतीय का
गौरवान्वित
भारत का मस्तक
सैल्यूट दुनियां का।

सन्दर्भ – दुनियाँ के महत्त्वपूर्ण देशों पर साईबर हमला। रैन समवेयर नामक वाइरल 'वानाक्राय' के झण्डे तले बवाल मचा रहा है। कम्पूटर समूहों पर अलग अलग तरह से दुष्परिणाम दिखाकर बिटकॉयन में 'रैन्सम' की माँग करता है। पता भी नहीं चल सकता कि किस देश को कितना नुकसान हुआ? किसने कितना रैन्सम देकर अपनी फ़ाईलें और डाटा बचाए? दुश्मन भी अदृश्य, शस्त्र भी अदृश्य और इस युद्ध में जो हताहत हुआ, वह कहीं गुहार भी न कर सके! बदलते समय की चुनौतियों को पहचानो भारत!

23- अपराधी धन-सत्ता

वानाक्राई का
साईबर हमला
धनी होने की
अन्तर्राष्ट्रीय होड़
सब जायज
युद्ध और प्यार में
दोनों व्यापार
मारकाट हावी है
मानव पर
साईबर-सीरिया
एकसमान
वानाक्राई अस्त्र है
मिशाईल है
उत्तर कोरिया की
अमेरिका की
माईक्रोसोफ़्ट की या
बिटकॉयन
नाम ही अलग हैं
सबका बाप पैसा।

24 – सतत अन्तर्संघर्ष

सन्दर्भ – कोलकाता के टीपू सुल्तान मस्जिद के मुफ़्ती-मालिक मोहम्मद बरकती भारत सरकार के विरुद्ध बार-बार अनर्गल बयान देते हैं। राष्ट्रवादी मित्र अनवर अली ने उसीकी भाषा में ललकार दिया! इसी तरह तेरापन्थ, भाजपा, कट्टर इस्लाम, आदि समुदायों के अन्तर्मन्थन की प्रक्रिया जाने अनजाने जारी है; मीडिया की भी इसमें बड़ी भूमिका है। हर तबके, समूह और सम्प्रदाय की अपनी अपनी भीतरी उलझनें हैं, सबके अपने अपने सँघर्ष हैं। सँघर्ष मानव के अन्तर्मन में चले तो शुभप्रद, बाहर किसी को 'दूसरा' मानकर चले तो पूरी मानवता का दुर्भाग्य!

बरकती को
अनवर अली है
सही जवाब
परस्पर जानते
तेरापन्थ को
कुमार श्रमण है
नरेन्द्र मोदी
भाजपा हिन्दुत्व को
तीन तलाक
कट्टर इस्लाम को।
अन्तर्मन्थन
हर युग का सत्य
अमरत्व का
महाभारत सूत्र
स्थायी केवल
सतत बदलाव।
एण्टीथिसिस
हर थिसिस हेतु
प्राणधारा है
सातत्य रहता है
अन्तर्शुद्धि सहित।

25 – राम और अल्लाह

सन्दर्भ – आस्था ने गीता को कुरान के विरुद्ध खड़ा कर दिया और कुरान के विरुद्ध बाईबिल को। न कुरान समझी, न गीता बाईबिल; सुना समझा तो किसी मुल्ला, पण्डित या पादरी को! अब इन तीनों को तो अपनी दूकानें चलानी चमकानी हैं; और अपनी दूकान चलाने का सीधा तरीका है कि पड़ौस की दूकान बन्द हो या हमेशा जूझती रहे! लेकिन फ़िरभी राहत की बात अभी बाकी है; गनीमत है कि भले मुस्लिम ईसाई लड़ मरें, पर 'इन्सान' आपस में कभी नहीं लड़ते। इन्सान दूसरे के लिए अपनी जान तो दे देता है, पर किसी की जान नहीं लेता! बस इतना सा काम बाकी है कि इन्सानों के दिल-दिमाग से हिन्दू-मुसलमान आदि भेद बाहर कर देने हैं। यह होना सरल है, नैसर्गिक है अतः हो ही जाना है।

आस्था का मुद्दा
राम व अल्लाह को
विरोधी खेमा
बनाकर लड़ाता
न्यायालय में
अपराधी बनाता
गवाही देते
राजनेता मीडिया
निरे लफ़्फ़ाज
अपना बौनापन
ग्रन्थों से ढके
अपनी नंगई को
पन्थावरित
कर रहे बेशर्म
अनधिकार
लड़ाते मासूमों को
हिन्दू मुसल्मानों को.

26 - आतंकित मा माटी मानुष

सन्दर्भ – मोदी ने नारी सुलभ नम्रता और गरिमा अपना ली तो माया ममता ने नरसुलभ अक्खड़ता, क्रूरता और अभिमान ओढ लिया। ममता तो गुण्डई तक उतर आई है, मोदी को रस्सियों से बाँधकर जेल तक घसीटने का बयान देती है। उसकी शह पाकर बरकती आदि उभर आते हैं, बंगाल की रवीन्द्री गरिमा निपट 'गुण्डई' की पहचान बना लेती है। स्थानीय निकाय चुनावों के दौरान यह पहचान अनेक आयामों में प्रकट हुई।

पश्चिम बंग
चुनाव परिणाम
कुछ भी आएं
दीदी की जुर्म कथा
प्रकाशित है
जन गण मन में।
पार्टी के गुण्डे
बम बन्दूक लाठी
आतंकी दृश्य
मुसल्मान से ज्यादा
ममता दीदी?
कहाँ गया कानून
सुरक्षाकर्मी
स्व-रक्षा में चिन्तित
खानापूर्ति में
दण्डित आम जन
आतंकित है
रविन्द्र की धरती
मा माटी मानुष भी!

सन्दर्भ – मित्र मोदी की आदर्शवादी कल्पनाशीलता, अथक श्रम, दैवीय व्यवहार कुशलता और वैश्विक मंगलकारी दूरदर्शिता विरोधी का भी मन जीत लेती है। भ्रष्टाचार के बोझ तले कर्राहते जन गण को मात्र तीन वर्षों में उबार कर ज्ञानदर्शनचारित्रपूर्वक विश्वगुरु होने का आनन्द, उत्साह, दिशा और गति प्रदान की है। मोदी का विरोध उसकी गरिमा को और प्रकाशित करता है; विरोधी मित्रों का बौना कद स्वतः प्रकट हो जाता है। नीतीश यादव सरीखे सच्चे राजनीतिज्ञ प्रधानमंत्री मोदी की उच्च गरिमा को स्वीकार करके अपना कद थोड़ा ऊँचा करते हैं, ममता अरविन्द काँग्रेस और नीचे।

16-5-17

27 - बढता भारत

तीन बरस
मोदी सरकार के
पूरे हो गए
उपलब्धि गिनाते
भाजपा नेता
कमियाँ बताते हैं
विरोधी दल
दोनों बढ चढ के
दूसरे पर
आरोप प्रत्यारोप
जन गण का
मन आड़ोलित है
अधिनायक
सतत युद्धरत
विजीगिषु है
दूरदर्शितापूर्ण
हर कदम
बढता ही जा रहा
मंजिल की तरफ।

सन्दर्भ – इस्लामिक आतंकवाद के मुद्दे को कूटनीतिपूर्वक अन्तर्राष्टीय मंच पर इसतरह साधा है कि अपनी कट्टर एकता के कुख्यात इस्लाम कई टुकड़ों में खण्ड खण्ड हो गया। इस्लामिक देश सिर्फ़ शिया सुन्नी के आधार पर नहीं बटे, बल्कि आतंकवाद विरोधी विश्व जनमत से उपजे आर्थिक/ राजनैतिक/ सांस्कृतिक समीकरणों ने इस्लाम को जड़ता से बाहर आकर अपने स्थानीय/राष्ट्रीय हितों को वरीयता देना अनिवार्य हुआ। इस सबके समग्र परिणामस्वरूप आतंकवाद का पोषक पाकिस्तान और जनक अमेरिका दोनों अपने अहँकार से ऊपर उठकर सोचने को मजबूर हुए हैं। विस्तारवादी चायना इसी राह पर है। भारत के मित्रों की लगातार बढती सँख्या विश्वपटल पर नया इतिहास रचने की प्रक्रिया में है।

7-6-17

28 - टूटता पाकिस्तान

अलग हुए
इस्लामिक उम्माह
बड़ी घटना
विश्व राजनीति में
तेल का खेल
राष्ट्रवाद से छोटा
संस्कृति मूल्य
सिर चढ बोलते
बंगलादेश
ब्लोच सिन्ध गिल्गित
एक ही स्वर
सांस्कृतिक है राष्ट्र
भारतगान
हारा है पाकिस्तान
शाश्वत हिन्दुस्थान!

सन्दर्भ – मित्र मोदी हर कठिन चुनौति को जीतकर उसका जश्न नहीं मनाता, बल्कि तत्काल उससे बड़ी चुनौति से आँख मिला लेता है, उसे ललकार देता है। भारतमाता की हर बेड़ी को काट फ़ेंकने का जैसे दृढ संकल्प ले लिया हो! जैसे मोदी का व्यक्तिगत जीवन बेदाग है; वैसा ही दोषमुक्त, समस्यामुक्त उज्ज्वल भारत हर साधक की साधना का अभीष्ट है; जननायक मोदी विश्वगुरु भारत की राहें प्रशस्त कर रहा है।

29 - चिर अतृप्त कामना

सफलताएं
नई चुनौतियों का
द्वार खोलती
नहीं देती विश्राम
सबका काम्य
अतृप्त ही रहता
अथक श्रम
अनन्त काल तक
कैसे करेगा
तर्कप्रिय मानव?
अन्त विश्राम
क्या सूझ भी सकेगा
भागदौड़ में?
सुख की खोज कभी
होगी सम्पूर्ण?
क्या बना राजमार्ग
लक्ष्य पाने का?
भटका है मानव
क्या यही सफलता?

30 – प्रदूषित है सोच

सन्दर्भ – पाँचों तरह का प्रदूषण चरम पर आकर मानवीय सभ्यता के अस्तित्व पर संकट बनकर खड़ा है। प्रगति की तकनीकी धारा ने उपभोग के आयाम और गति को बेहद बढा दिया है। जितना उपभोग उससे तिगुना कचरा पैदा करने वाली 'विज्ञापनी पैकिंग' ने कोढ पैदा किया और वर्ष में दो बार बदलने वाली नई तकनीकसम्पन्न इलेक्टोनिक उपकरण श्रेणी ने रेडिएशन खतरे वाली खाज। सिर्फ़ दिल्ली की चर्चा इसलिए कि वह देश की राजधानी है, राजनीति की दंगलभूमि भी। आम आदमी भी जिद में अड़ा है...

बढता कूड़ा
ढकता सभ्यता को
शताब्दी तक
आजाद भारत के
चतुर जन
गण को भटकाते
न बदलते
यह जीवनशैली
दम्भपूर्वक
सामान्य से अलग
दिखना चाहे
बाजारी कल्चर ने
बढाया कूड़ा
प्रदूषित किया है
आम सोच को
प्रदूषित सोच ने
दूषित किया
कथनी करनी को
यही है सर्वनाश!

31 – सेना पर सियासत?

सन्दर्भ – वामपन्थी ने फ़िर सेना को अपमानित करने वाली ट्टिपणियां की। जन्म से ही संचित हिन्दू विरोधी मानसिकता अब भारत विरोधी बनकर प्रकट है। व्यक्तिगत चरित्र श्लाघनीय होकर भी संस्कृतिक राष्ट्रीय, चरित्र निन्दनीय/दण्डनीय है। दुर्भाग्य से दूषित वोट राजनीति उनको खुराक उपलब्ध करा देती है।

सियासत क्यों
सेना के काम पर?
वाम पन्थ की
पहचान बनी है
देशद्रोहिता
हिन्दू विरोधी निष्ठा
केन्द्र सोच का
वही भारतद्रोह
हिन्दू - भारत
समानार्थक शब्द
प्रमाणित है
इस परिस्थिति में
थूक फ़ेंकते
अपने मुँह पर
स्पष्ट करते
अपनी करनी को
कलंकी अतीत को!

सन्दर्भ – जी न्यूज पर 'तालठोंक के' कार्यक्रम का दर्शक इन्तजार करते हैं। शाम की चाय के साथ खूब गर्मागर्म चटपटी बहस चुस्कियों के मजे को दुगुना कर देती है। देश विरोधी दलीय प्रवक्ताओं की बेबाक धृष्टता देखकर गुस्सा भी आता है संविधानिक धाराओं पर। देश के बहुसँख्यक हिन्दू समाज को चिढाने वाली मुद्राएं बनाकर अपने देशद्रोही भड़ास को खुले आम प्रकट करने वाले न सिर्फ़ राजनीति में हैं बल्कि सामुदायिक मीडिया और शैक्षणिक क्षेत्र में भी प्रभावी स्तर पर जमे हैं। देश की वोट आधारित 'धर्म निरपेक्षता' संविधान का हिस्सा बनकर कहर ढा रही है। संस्कारगत परम्परा से ही सहिष्णु और सर्वधर्म का आदर करनेवाला हिन्दू मन संवैधानिक बाध्यता से भौंचक्का है। ऊपर से संवैधानिक भावनाओं का शोषण करते हुए 'सेकुलर' दिग्गज हिन्दू भारत को चिढाने और हिकारत से नकारने का कोई मौका नहीं छोड़ते! उनका सामूहिक परिचय कराता और उनको ललकारता यह ताँका -

32 – सज गया कुरुक्षेत्र

एक साथ हैं
सारे देश विरोधी
ताल ठोंक के
हर क्षेत्र के दुष्ट
कुरुक्षेत्र में
ग्यारह अक्षौहिणि
दुर्योधन की
दुष्ट धन के साथ
सत्ता के लोभी
भारत के गद्दार
सजा योग्य हैं
लातों के यह भूत
नहीं मानेंगे
सांस्कृतिक संवाद
हिन्दुस्थान की बात।

सन्दर्भ – मध्यप्रदेश किसान आन्दोलन । पुलिस और किसानों के बीच हुई झड़प में गोली चली, किसानों की दुःखद मृत्यु हुई और काँग्रेस आग लगाने कूद पड़ी। किसान का हित पता नहीं कितने राजनैतिक पेंचों में उलझ गया... देश की कर-संचित सम्पत्ति 15/- रुपया किलो प्याज खरीद करके पहले बरसात में बर्बाद होने और बादमें उसी प्याज को 2/- किलो उन्हीं बिचौलियों के हाथों बेचने में लुटी! जन गण टापते रह जाते!

33 - सब पर मीडिया भारी

सत्ता संघर्ष
जनता पर भारी
जान ले लेता
किसान आन्दोलन
गोली से मरे
पुलिस या गुण्डे की
जाँच से पूर्व
निष्कर्ष दे मीडिया
दूषित छवि
पुलिस से भी भूल
होना संभव
फर्क नीयत का हो
सही कसौटि
राजनैतिक चालें
कंधा ढूंढती
किराए के शूटर
या पुलिस में
कोई गद्दार पाती
जन गण का
ध्यान खींचने हेतु
राजनीति का
यह फ़िल्मीकरण
टेढे समीकरण।

34 - हाथी चले बजार

टीवी चैनल
जाँच के संजाल में
ताकि भय हो
सत्ता शक्तिशाली है
नहीं चलेगा
अनर्गल विरोध
कश्मीर में भी
रावत के तेवर
नागवार हैं
भारत द्रोहियों को
कठोर योगी
सहारनपुर में
अब नहीं है
पिलपिला शासन
पहली चोट
स्वयं पर करते
उसी हथियार से
दुष्ट दलन
बढते योगी मोदी
भौंकते रहें पप्पू!

सन्दर्भ – अर्णव गोस्वामी और उनके चैनल सीबीआई जाँच के घेरे में आई, और सभी राष्ट्रविरोधी दल एकसाथ उसके बचाव में आगे आ गए।
सारे विरोध के बावजूद योगी मोदी सभी मोर्चों पर आगे बढते जा रहे हैं।

7-6-17

सन्दर्भ – अमेरीकी राष्ट्रपति ने आतंकवाद को सीधा इस्लाम से जोड़ा और और अपने देश में चन्द मुस्लिम देशों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। भारत का जन गण मन भी इस्लामी अलगाववाद और उसके सहज फलित आतंकवाद से जूझ रहा है। सम्प्रदाय निरपेक्षता की आड़ में देशद्रोह सीना ताने मुँह चिढाता रहता है; राष्ट्रीयता की परिभाषा अपने सही अर्थ तलाश कर रही है। दूसरी तरफ अबतक अभेद्य रही कट्टरता और 'ऊम्माह' आधारित एकता में देश विदेश स्तर तक टूटन शुरु हुई; सोच से परे जाकर सारे समीकरण बदल रहे हैं।

35 - विश्व-गुरुत्व

बदल रहे
विश्व समीकरण
तेल के परे
मुस्लिम कट्टरता
अन्तर्द्रोह में
भोथरी हुई जाती।
ट्रम्प की हठ
थामते अमरीकी
चायना पाक
घिरते ही जा रहे
निजी जाल में
सांस्कृतिक प्रवाह
संजीवनी दे
'वसुधा कुटुम्ब' को
विश्वगुरुत्व को भी।

सन्दर्भ - यह चौका साधक के अपने पाले में लगा है। सात दशक की ओर बढती देह में इस मोदी धारा में नई स्फूर्ति का संचार हुआ है। कुछ नया शुरु करने को मन करता है। इस विचार ने आकार लिया अगस्त माह में। साधक ने कठोर आयम्बिल तप स्वीकारा, स्वयं की शोध में दो चार कदम और आगे बढा।

36 - संजीवित साधक

बढ रही है
अपनी जिम्मेदारी
मोदी युग में
कदम मिलाने की
रिस्क लेने की
नवीन करने की
निराशा गई
हताशा तिरोहित
नवयौवन
एक नया उत्साह
चारों प्रहर
सक्रियता देता है
नया सीखना
शिशु सा सुख देता
नई रचना
स्वयं को सँवारती
और आगे बढाती।

सन्दर्भ – मध्यप्रदेश का किसान आन्दोलन। उद्वेलित किसान पर व्यापक हिंसा का आरोप लग रहा है, अत्यन्त चिन्तनीय मुद्दा है।

37- आन्दोलित धरती-सुत

मन्दसौर में
हिंसा पर उतरे
शान्त किसान
चिन्तनीय प्रसंग
धरतीपुत्र
हिंसक बन गया?
संवेदनाएं
दिशा बदल गई
खतरा बढा
शान्त मध्यप्रदेश
नक्सली हिंसा
किसान आन्दोलित
चरम दुर्भाग्य है!

38 – आषाढी रिमझिम

सन्दर्भ – आषाढ की पहली रिमझिम। अपने किचन गार्डन की खुली छत पर जैसे बहार छा गई। इधर बूँदें बरसी नहीं कि पड़ौसी बच्चों की टोली आ जुटी। सब नाचे, अपना अपना अलग गीत गाने लगे, तो यह शोर भी बहुत सुरीला हो गया। इधर फर्श पर गिरा पानी फर्श को दर्पण बना रहा है, जिसमें पूरी धमाचौकड़ी का उल्टा चित्र बिल्कुल फ़िल्मी लग रहा था, मनोजकुमार की कैमरा टेकिंग याद आ गई।

पहले एक
फिर दो पाँच दस
बिखर गई
झमाझम हो गई
बूँदें बरसी
हवाओं की गरमी
शीतल हुई
तन मन थिरका
सुर ताल में
बरसता संगीत
मनभावन
नृत्य गीत बूँदों का
दर्पण हुआ
तपता सा आँगन
नँग धड़ँग
उधमी शिशु दल
मस्ती बिखेरे
रस से भीग रहे
परस्पर में
आषाढी बरसात
किसमत की बात।

39 - दूधिया मुस्कान

सन्दर्भ – वही बरसात का गीत! पूरा हुआ नहीं कि मीठी धूप चमक गई। नया गीत बनते क्या देर लगनी थी?

वर्षा के बाद
धूप का चमकना
जैसे कि शिशु
रोते रोते हँस दे
या रूठी हुई
प्रेयसी मुस्कुरा दे
डबडबाती
आँखों बीच मुस्कान
ऐसे चमकी
जैसे पुष्प में ओस
तन मन हर्षा दे।

सन्दर्भ – मध्यप्रदेश शासन किसान आन्दोलन के पेंच में ऐसी उलझी कि एक के बाद एक गलत कदम कोरी भावुकता और आदर्शवाद के चक्कर में बढाती चली गई। तात्कालिक दबाव में पारदर्शिता का पल्ला और पकड़ लिया। अनशन किया, भावुक सा नौटंकी भाषण दिया और सारा प्याज खरीदने का एलान भी कर दिया। मन्दसौर में प्याज भरे ट्रकों की लाईन मीलों लम्बी हो गई, टीवी पर तमाशा हुआ। संशय बढता ही गया।

40 – भस्मासुरी कूटनीति

संशय देता
दुर्घटना का चक्र
सियासी पेंच
समझ से परे है
शिव शासन
भस्मासुरी पेंच में
जन गण का
असह्य सरदर्द
पारदर्शिता
न हो कूटनीति में
चाहिए सही नीति।

सन्दर्भ – मुस्लिम देश ईरान की चलती संसद पर आतंकी हमला हुआ। शिया सुन्नी झगड़े का वीभत्स रूप दुनियां के सामने आया। भाईचारे और शान्ति का पैगाम क्या हुआ? इतने छेद हुए इस्लाम रूपी जहाज में, तब भी मानने को तैयार नहीं कि आतंक और इस्लाम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शुम्भ और निःशुम्भ की तरह!

41 – शुम्भ-निशुम्भ

बारह मरे
ईरान संसद में
आतंकवाद
भस्मासुरी हो गया
संघर्षरत
सिया सुन्नी मुस्लिम
और कितने
टुकड़े अपेक्षित
नष्ट करने
स्वर्ग सी धरती को?
कहाँ ईमान
कहाँ है भाईचारा
कोरा प्रलाप
शेष करे पन्थ को
कयामत है
या उपद्रवी आग
कौन किसे बताए?

42 – आचरणों में भारत

देश सेवा में
न हो पद का मोह
दायित्वबोध
सदैव हावी रहे
भावना पर
प्रसिद्धिपरान्मुख
सादा जीवन
रहे साधक भाव
उच्च विचार
वैसा ही आचरण
अन्तर न हो
कथनी करनी में
चलें आचरणों में।

सन्दर्भ – स्मरण नहीं आ रहा कि किसे ईंगित करके बनी यह रचना। वैसे बिना किसी सन्दर्भ के भी इसका मूल्यांकन हो सकता है। वैसे भी अब शीर्ष नैतृत्व में यह आदर्श चरितार्थ है।

43- हर शाख पे उल्लू

मुख्य समस्या
मुद्रा अधिमूल्यन
भरमा देता
ज्ञानी गुणियोंको भी
मति हर ले
सज्जन सुधियों की
उल्लू बनाता
सिर पर बैठता
न देखने दे
सत्य दिनकर को
निज अमंगल को।

सन्दर्भ - रचना के लगभग एक माह बाद अब सन्दर्भ को याद करना सजा जैसा है; बिना सन्दर्भ ही आनन्द मिले तो पा लें।

सन्दर्भ – व्यक्ति और समाज के बीच रिश्ते पर बहस जारी है। व्यक्ति के लिए समाज है या समाज के लिए व्यक्ति? कौन किसके अधीन, कौन किसके लिए?
परस्पर पूरक होकर भी केन्द्र स्थित में कौन है, परिधि पर कौन चक्कर लगाए? कौन किसकी फ़ेरियां दे? गुरु कौन लघु कौन?
8-6-17

44 - परस्परता

अन्योन्याश्रित
जीवन के आयाम
परस्परता
सदा अपरिहार्य
गुरु का यश
शिष्य के वश में है
गुरु के हाथ
शिष्य की सफलता
मां का मातृत्व
शिशु से महकता
शिशु का जीना
मां पर आधारित
व्यक्ति समाज
परस्पर आश्रित
यही सहअस्तित्व।

सन्दर्भ – मध्यप्रदेश से शुरु होकर पूरे देश में भड़क गया किसान आन्दोलन। भारत की जमीन सादगी, कष्ट-सहिष्णुता, अहिंसा और परदुख कातरता की पहचान वाली है; वह मूल पहचान ही इस आन्दोलन से प्रश्न के घेरे में आ गई। वैश्विक अर्थ-नीतियों के संजाल में अध्यात्म प्रधान भारत भौतिकता की प्रतियोगी दौड़ में आ गया। विश्व के विचारक जानते हैं कि भौतिकता की यह दौड़ मानव सभ्यता और धरती के अस्तित्व पर स्पष्ट संकट है; और इस व्यामोह में से मानव को सिर्फ़ भारत बाहर निकाल सकता है। अब भारत का किसान भी अर्थके दुष्चक्र में आ फ़ंसा है तो क्या कहा जाए?

45- उत्तम खेती मध्यम बान

खेती किसान
आम चर्चा का केन्द्र
शान्त झील में
जैसे पत्थर फ़ेंका
उठी लहरें
अमाप्य है विस्तार
जितनी बातें
उतना काम नहीं
बढती मांगें
कहीं विराम नहीं
खोया मानव
पशुता दानवता
बेलगाम है
राजनीति के पेंच
बेशर्म चालें
उलझा अर्थ तन्त्र
मरता है किसान!

सन्दर्भ – मानव जनित और प्राकृतिक सभी समस्याओं से मुकाबला करने के लिए शिक्षा के लिए अग्रणी भूमिका चिरकाल से बनी हुई है। वर्तमान की विडम्बना यह है कि जिस शिक्षा से समाधान पाने की आशा की जाती है, वह स्वयं एक बड़ी समस्या बनी है।

46- इतराती शिक्षा

पहले से थी
समस्या ग्रस्त शिक्षा
फ़ेसबुक ने
कोढ में खाज दे दी
बूस्टर बना
ये सोशल मीडिया
रॉकेट गति
सूरज से मिलने
नापे आकाश
छूट गई धरती
जड़ों से कटी
प्रयोजन भटकी
पहेली बनी
सबको उलझाती
पागल बना देती।

सन्दर्भ – यह रचना नए पन्थ के उद्भव, उत्कर्ष और अवसान की प्रक्रिया का सूत्र है। कोई मानव-कल्याणकारी विचार जन्म देता है पन्थ को। उस विचार को अपने आचरण में उतारने के लिए जितनी मात्रा में लोग जुटते हैं, पन्थ उतना उत्कर्ष पाता है। कालक्रम में पन्थ के संचालक गण विचार को छोड़कर मात्र शब्दों का खेल खेलने लगते हैं तो पन्थ का अवसान होजाता है। पुनः उस विचार को नए पन्थ का कलेवर मिलता है और मानव की सत्य-शोध की यात्रा अनवरत चलती है। विचार कभी मरते नहीं।

47 - विचार की धारा

पन्थ बनते
विचार विशेष को
आचार तक
उतारने के लिए
किन्तु होता है
इसके विपरीत
खोता विचार
किनारे आचरण
टापता रहे
विचार को तलाशे
पन्थ निर्माता
लौट के न देखते
यह दुर्गति?
न मरता विचार
नए पन्थ में
उतरता विचार
बनने को आचार।

सन्दर्भ – किसानों की बढती आत्महत्यायें समाजिक चिन्ता चिन्तन का मुद्दा है। वोट आधारित राजनीति ने इसे नासमझ राजनैतिक हाथों में पहुँचा दिया।

48- भटकते शब्द

शब्द से ग्रन्थ
ग्रन्थोंके भाष्य टीका
समीक्षा शास्त्र
अनन्त है विस्तार
जितना ज्यादा
उतना बड़ा पन्थ
भ्रमित करे!
ग्रन्थित है मानव
उलझ गया
शब्दों के जंजाल में
खोया मन्तव्य
मिल जाता 'अक्षर'
अर्थ सहित
शब्द होता सार्थक
जो मिलाता अक्षर।

सन्दर्भ – शिक्षा से आशा की जाती है कि मानव के प्रश्नों का हल बताए; जबकि आज वह स्वयं एक बड़ा प्रश्न बनकर रह गई है। मानव को सही आचरण की तरफ प्रेरित करने के मुख्य लक्ष्य से भटकी शिक्षा ने बहुतेरी इतर प्रवृतियां अपना ली हैं। नौकरी पाना ही शिक्षित की अन्तिम मंजिल हुआ।
नए के प्रति लुब्ध मन इन इतर प्रवृतियों के चक्रव्यूह में उलझा आत्म-विनाश और सर्वनाश की तरफ तेजी से बढ रहा है।

49 - प्रयोजनहीन संस्थान

स्कूल कॉलिज
सारे शिक्षा मन्दिर
हटे शिक्षा से
एक्ट्रा कैरीकुलर
ज्यादा हो रहा
लक्ष्य से हटकर
कुंठा फ़ैलाती
हर लेती विश्वास
जॉब के बल
घिसटती जिन्दगी
न मिले जॉब
तो बोझ बन जाती
देन शिक्षा तन्त्र की।

50 - संगीत

सहज होता
जीवन को जी लेना
मुश्किल कहाँ
सारी सृष्टि रचना
सुखदायक
गीत संगीत भरा
नृत्य करता
जड़ चेतन सब
मानव हित
बस स्वयं मानव
प्रश्नचिन्ह है
अपने आप पर!
करे प्यार स्वयं को।

सन्दर्भ – यह आशु-रचना फ़ेस-बुक पर 'सृजन-संगम ग्रुप' द्वारा प्राप्त संगीत शब्द पर बनी है।

51 - शुमार

राम रावण
सिर्फ दुश्मन नहीं
मित्र पूरक
अन्योन्याश्रित भी हैं
एक के बिना
दूसरा न जमता
सदा शुमार
एक में दूसरे का
कौन जानता
रावण के सिवाय
राम का नाम?
रावण से है राम।
राम से रावण भी।

सन्दर्भ – फ़ेसबुक; सृजन-संगम ग्रुप; शुमार शब्द। साहित्यिक मित्रों का यह ग्रुप कोई एक शब्द फ़ेंककर उस शब्द को स्वयं में समेटती आशु-रचना मांगती है। शब्द-प्रयोग करने वाला ही अपनी आशु-रचना से एक शब्द अगले प्रतिभागी के लिए फ़ेंक देता है; इसप्रकार नव-सृजन प्रवाह बन जाता है। रोचक साहित्यिक खेल बनाने वालों को प्रणाम।

9-6-17

सन्दर्भ – फ़ेस-बुक; सृजन-संगम ग्रुप; झूठ शब्द पर आशु-रचना। साधक की शताधिक आशु-रचनाएं टाईम-लाईन पर प्रकाशित हैं। इस मीडिया ने साहित्य की बड़ी सेवा की है; सरस्वती को व्यवसायिक फ़ंदे से बाहर किया है।

52- झूठ

सत्य न होता
मान लिया जाता है
झूठ चलता
सत्य के पांवों पर
भ्रम-विस्तार
हर झूठ के साथ
बढता दुःख
यह मकड़जाल
निज का फ़ंदा
करे सांसें मुश्किल
जीना हो नर्क
अपने ही हाथ है
अपना स्वर्ग-नर्क।

सन्दर्भ – चायना-पाक सीमाओं पर बढती मुठभेड़ों के सन्दर्भ में विरोधी पार्टियों के बेसिर-पैर के आरोप टीवी चैनलों पर चलती बहसों और सोशल मिडिया पर छाए रहे। भाजपा के प्रवक्ता हर बार उनको सटीक उत्तर भी देते रहे। विरोधी दलों की माँग है कि मोदी क्यों नहीं कुछ बोलते? जबकि दर्द उनका यह था कि इन अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर सर्वदलीय बैठक बुलाकर उनसे क्यों नहीं पूछा जाता? मित्र मोदी ने इस सन्दर्भ में सीधा ही दोनों देशों को भारत का स्वर बता दिया, तो और तिलमिलाए काँग्रेसी-वामपन्थी!

9-6-17

53 – बूढों का आहत अहँकार

चीन पाक को
स्पष्ट चेतावनी दी
मित्र मोदी ने
मंजूर है सम्पर्क
दखल नहीं
सम्प्रभुता देश की
बाधित न हो
भारत की रक्षा से
क्यों चिढ रहे
काँग्रेस वाम मुल्ले
पेट में दर्द
बस इतना ही है
न पूछा हमें
हमें किनारे कर
बढते क्यों हो?
दवा लेना न चाहे
बूढे बड़बड़ायें।

54 - कुएं का मेंढक

सन्दर्भ – वर्तमान राजनैतिक पटल से तेजी से गायब होती काँग्रेस का एक परिदृश्य।

बूढी काँग्रेस
बदलती हवा को
कैसे स्वीकारे
मेंढक है कुंए का
उछल कूद
अपने दायरे में
ऊँची से ऊँची
कितनी भी कर ले
महासागर
मोदी से प्रतिस्पर्द्धा
राम राम कहो जी।

55- मुद्दा नारी-स्वातन्त्र्य का

सन्दर्भ – सुपरहिट फ़िल्म दंगल की नायिका फ़ातिमा शेख का एक बिकिनी पोज सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, तो भारत मे मुफ़्ती-मुल्लाओं की फतवे बाजी बहस का मुद्दा बन गई। नारी-स्वतन्त्रता के तीव्र स्वर बिकिनी-फ़ातिमा के समर्थन में हैं; मीडिया नारी-स्वतन्त्रता के समर्थन में पारिवारिक-सामाजिक पहलू की उपेक्षा ही कर देती है।

बिकिनी चर्चा
फ़ातिमा शेख पर
विमर्षणीय
नर-नारी का फर्क
नकारें कैसे?
देह का आकर्षण
नंगा या ढका
मन मोहता ही है
नैसर्गिक है
सृष्टि का नियम है
बचता कौन
ऋषि विश्वामित्र भी
मेनकाओं से
बच कब पाए हैं
कुरान हो या
गीता पुराण स्मृति
या वर्तमान
आचार शुचिता तो
आवश्यक है
सही कहे कुरान
पुरुष को भी
तय करनी सीमा
औरत को भी
तो मिलकर करें
संवादपूर्वक ही।

56 - निसर्ग की भाषा

चहचहाती
मनभाते स्वरों में
चिड़िया रानी
समझ में न आए
क्या कहती है
पर अच्छी लगती
जैसे कि शिशु
बोलना शुरु करे
तो हर्षाता है
समझ कौन पाता
उसके भाव?
टिमटिमाते तारे
खिलते पुष्प
गुनगुनाते भौंरे
नदी किनारे
कल कल आवाजें
रेलयात्रा में
पीछे भागते पेड़
ऐसे फसाने
जो न जाने अंजाम
बिखरे सरे आम।

सन्दर्भ – किचन गार्डन में चन्द रंग-बिरंगी चिड़िया अपने बड़े से पिंजरे में फुदकती चहचहाती हैं; मनभाती हैं। उनके साथ कुछ देर बैठा तो संवाद सहित रचना बन गई।

57 - अभाव का अभाव

अर्थ संजाल
जकड़ गया जन
, सारे जग में
एक इसी की सत्ता।
सबका बाप
कुछ भी करवा ले
अच्छे अच्छों से
मोल चढते सब
बिकते सब
ईश्वर करे अब
जागे भारत
न बिके चायवाला
टूटे ये जाल
ऋण मुक्त भारत
विश्वगुरु भारत।

सन्दर्भ - 'मन्दिर से पहले शौचालय' जैसे अपने अविमर्षित अभियान में मोदी हर घर को शौचालय से विभूषित कर ही देंगे; जबकि जन-गण-मन की आशा मन्दिर-निर्माण की तरफ है। इसी सूत्र को वर्त्मान में आर्थिक महाशक्ति बनते भारत के साथ जोड़कर देखें। जैसे मन्दिर जाने से पूर्व शौच-निवृत्त होना उचित है; वैसे ही विश्वगुरु बनने से पूर्व भारत का 'सोने की चिड़िया' बनना आम-जन के गिरे-पिटे विश्वास को पुनर्जागृत करता है। आत्म-चर्चा से पूर्व 'अभाव का अभाव' होना आवश्यक है। आशा है मोदीजी कि मन्दिर बनेगा, भारत विश्वगुरु बनेगा।

58- अधर्म का व्यापार

सन्दर्भ – धर्म शब्द का सही अर्थ है सृष्टि-संरचना के अटल नियम, जिनके आधार पर जड़-चेतन हर इकाई अपने अपने प्रयोजन के अनुसार अपनी नियत भूमिका का पालन करते हैं। हिन्दू, इस्लाम, ईसाइयत, जैन आदि पन्थ सम्प्रदाय और परम्पराएं उन सृष्टि-नियमों को जानने-समझने के मार्ग हैं। आज धर्म के नाम पर जो चल रहा है, वह इस रचना में देखें।

धर्म संस्थान
सबका आस्था केन्द्र
बेशकीमती
दिलों का बादशाह
विरोध कोई
करता नहीं कभी
आस्था से बन्धे
अनुयायी बनते
धर्म अपना
निजी अर्थ खोकर
दूकान बना
सामान जो बिकता
जुट ही जाता
सारा नकली माल
विज्ञापनों से
बम्पर बिक्री होती
आस्था के बल
शिकायतें दबतीं
भीतर लावा
बाहर है दिखावा
धर्म के नाम
फूलता फलता है
अधर्म का व्यापार।

सन्दर्भ – व्यक्ति, परिवार, समाज, संस्कृति और विश्व-मानव से जुड़े उच्च मानवीय मूल्यों विश्वास, मैत्री, गौरव ममता,वात्सल्य,स्नेह मैथुन, भय, प्रलोभन आस्था आदि पर कुछ चौका रचनाएं - 11-6-17

59 - भ्रम

भय की सत्ता
नहीं है अस्तित्व में
भ्रम में जीता
भय पाले मानव
भय से दुःख
और दुःख से भय
पूरा दुष्चक्र
भ्रम की उपज है
भयग्रस्त ही
आतंकित करता
परिवेश में
भय फ़ैलाता सदा
भ्रम को ही बढाता।

60 - रिश्तों की विडम्बना

सन्दर्भ – टूटते-बिखरते रिश्तों का दर्द समेटता एक चौका।

इक दूजे की
प्रेरणा-शक्ति होते
कमजोरी क्यों?
पति व पत्नी
पिता के साथ पुत्र
सास व बहू
भाई बहन मित्र
कोशिश यही
पर होता है उल्टा
यही है दुःख
परस्पर बाँटते
भ्रम बढाते
अपने ही भ्रम में
फ़ंसते हुए
सबको लपेटते
दुःख को पसराते।

61 - चतुर बनिया

सन्दर्भ – किसी राजनेता ने गाँधी को चतुर बनिया क्या कह दिया कि इलेक्ट्रोनिक मीडिया पर बहसें छिड़ गई। साधक ने इसी शब्द का सकारात्मक रूप देखा तो यह रचना बनी।

महात्मा गाँधी
चतुर था बनियां
सारे जग को
चक्कर खिला गया
लूटा सबको
खुशी बाँटते हुए
डूबा सूरज
ब्रिटिश शासन का
चश्मे-लाठी से
सध गया भारत
राम धुन
खुशगवार बेना
गण का मन
सर्वस्व लुटाकर
लूटा जग को
आधी धोती पहने
डेढ पसली
वह महामानव
दे गया नए अर्थ!

62- एक दिन का बादशाह

उड़ता आया
बर्थडे का बैलून
खुशियाँ लाया
पड़ौस की फ़्लेट से
मुस्कुराता सा
पसरा आँगन में
इतराता है
मानवीयता पर
जो फ़ैलती है
बिना भेदभाव के
परायापन
रँचमात्र भी नहीं
शिशु की भाँति
लुटाता है खुशियाँ
मिसाल छोटी
इसकी हस्ती बड़ी
एक दिन का
बादशाह बनाती
ब'र्डे बॉय को
फ़िर फ़ूटेगा फ़ुग्गा
शिशु-अरमानों का।

सन्दर्भ – बच्चा अपने जन्मदिवस पर दुनियां का बादशाह बना दिया जाता है। उसकी हर फरमाईश सब परिजन खुशी-खुशी पूरा करते हैं। दूसरे दिन से सालभर तक सबकी नसीहतें, झिड़कियां और डाँट-फटकार।

12-6-17

63 - वाद-विवाद-प्रवाद-प्रलाप

वाद टूटता
नया वाद बनता
नाते टूटते
नए सम्पर्क बनें
जीवन चले
जैसे वाद के बाद
वि-वाद आदि
प्रवाद-प्रलाप हों
न हों संवाद
संस्थाओं के कारण
न मिलें व्यक्ति
अहँकार से रिक्त
वाद से शून्य
वाद ही अहँकार
वाद ही संस्था
वाद से ही संघर्ष
वाद ही युद्ध
मुसीबतों की जड़
शिशु का शत्रु
शिक्षाओं का आधार
गन्दा व्यापार
इन्सानों का हत्यारा
केवल वाद
समाधान यही है
सत्यमेव जयते।

सन्दर्भ – वाद-विवादों में अटका भटका मीडिया अनजाने ही प्रलाप भरा शब्द-प्रदूषण फ़ैलाता है। यह शब्द प्रदूषण सोच को दूषित करता है, और दूषित सोच का परिणाम हुआ कि जीवन के आधार पाँचों तत्व प्राणलेवा स्तर तक प्रदूषित हो गए। वाद सही दिशा पकड़कर संवाद बने तो आदमी जी जाए।

64 - वाद से संवाद

चले संवाद
मिट जाएं विवाद
सारे ही वाद
एक मंजिलगामी
बाधक संस्था
सम्प्रदाय जातियाँ
देश सीमाएं
अनर्थकारी अर्थ
धर्म-दूकानें
शातिर राजनीति
शिक्षा संस्थान
महत्वाकांक्षाएं भी
सारे ही वाद
विस्तारित अहँ के
भिन्न आयाम
मानव कोरा बने
जैसा है वही दिखे।

65 - विडम्बना

सन्दर्भ – किसी वाममार्गी पत्रकार ने थल सेनाध्यक्ष के लिए अपमानजनक आलेख लिखा, किसी काँग्रेसी छुटभैये ने सड़कछाप बता दिया। टीवी पर चली बहसों में इस पर शर्मिन्दा तक नहीं हैं, उनका दुर्भाग्य!

सेनाध्यक्ष का
प्रत्यक्ष अपमान
धौंसपूर्वक
दुर्योधन पक्ष की
धूर्त नीति का
सीधा घोषणापत्र
परम्परा है
नहीं मांगते माफ़ी
घर के भेदी
वाम और काँग्रेस
पाक के संगी
बहसें ही करते
निजी कब्र खोदते।

66 - अन्तर्बाह्य मोर्चे

अढाई मोर्चे
एकसाथ खुले हैं
दो पर युद्ध
बाकी घर के भेदी
दुष्कर होता
अपनों से लड़ना
घोष सेना का
करते सेनाध्यक्ष
तैयार हम
पूर्ण विजय हित
जन गण को
आश्वासित करते
उधर मोदी
अपने मोर्चे पर
जीत ही जीत
विश्व पटल पर
चमका हिन्द
विवश हुए ट्रम्प
घटनाक्रम
सारे समीकरण
भारत के पक्ष में।

सन्दर्भ – भारत अन्तर्बाह्य संकटों से जूझ रहा है। हर मोर्चे पर विजय पाने का संकल्प सबको दिखता है; पूरे विश्व में भारत यशस्वी है।

66 - श्राद्ध

कर्ज माफ़ी के
अकल्पनीय होंगे
दुष्परिणाम
कर्ज के शिकंजे में
आम आदमी
आत्महत्या करते
तो देश का क्या?
हरेक जन पर
लाख का कर्ज
सन्तानें कर्ज तले
गुलाम होंगी
परतन्त्रता दंश
पशु बनाता
भावशून्य मन
श्राद्ध कैसे हो?
सर्वनाश की राह
कर्जमाफ़ी की चाह।

सन्दर्भ - क्रेडिट कार्ड पर आधारित आर्थिक विकास का पैमाना सेंसेक्स की सुई बन गई है तो उधार और घाटे की अर्थ-व्यवस्था के दुष्चक्र में जन गण का मृत्यु पर्यन्त त्रास अपरिहार्य है। दुःखी सन्तानें अपने इन पूर्वजों की श्रद्धा कैसे करेगी? श्रद्धा बिना श्राद्ध तो कर्मकाण्ड का बोझा ही होगा।

67- कर्ज का शिकंजा

सन्दर्भ – क्रेडिट कार्ड जीवनशैली राष्ट्र की नस नस में जिम्मेदारीशून्य भोग और कृतघ्नता से विषाक्त रक्त की तरह दौड़ रही है। सभी जीवनमूल्यों का आधार 'विश्वास' ही खतरे में है।

13-6-17

कर्ज का फ़ंदा
अपना चुनाव है
जीने की शैली
प्यार को छोड़कर
पैसा आश्रित
और पैसे का चक्र
क्रेडिट पर
उधार की जिन्दगी
मृत्यु उसीमें
पुनर्जन्म कर्ज में
दुष्चक्र चले
तीव्रतम गति से
सांसें गिरवी
देहान्तरों पर्यन्त
बुरे फ़ंस गए रे!

68- उधार जिन्दगी

सन्दर्भ – क्रेडिट कार्ड जीवनशैली पर एक और रचना। उधार पर पूरा अर्थ-व्यवहार आदमी को उधार की जिन्दगी जीने का आदि बना देता है। उसका अपना विश्वास खो ही जाता है।

क्रेडिट कार्ड
उधार की सुविधा
चोटी से ज्यादा
खर्चो, खरीदो, खाओ
अदा बाद में
शाही ठाठ लगता
गरिमाप्रद
पर वास्तविकता
नितान्त भिन्न
छूटे जीवन सूत्र
संयम
असंयम ही मृत्यु
पराया माल
अपना लगता है
कर्ज चुकाना
जरूरी नहीं होता
लेकर भूलो
चोरी, लूट, डकैती
छीनाझपटी
सब जायज होता
थोड़े जीने में
मस्त जीना हो तो
प्रेम में जियो
प्यार गया तो युद्ध
अनवरत युद्ध।

69 - वैभव की कुंजी

बचत शैली
स्वस्थ अर्थतन्त्र की
सार्थक कुंजी
जितना कमाते हो
चौथाई खर्चो
पुनर्नियोजन में
अधिक हिस्सा
अतीत भावी पीढी
पोषण पाए
ऋषि ऋण चुकाए
निश्चित भाग
सर्व जन हिताय
अवश्य जाए
अर्थ बढता जाए
स्व-चालित आशाएं।

सन्दर्भ - भारतीय अर्थ-चिन्तन निसर्गसम्मत अर्थ-व्यवहार का हामी है। जैसे निसर्ग की मानवेतर सभी इकाईयाँ स्वयं को विस्तारित करते हुए अन्य इकाईयों के लिए उपयोगी पूरक होती हैं, और शेष होने पर भी भावी सन्तति के लिए मिट्टी को उर्वर करती है, वैसे ही जन गण को अपनी आवश्यकता से अधिक कमाना और अपनी मर्यादित आवश्यकतानुसार खर्च करना उचित है। बची राशि सर्वजन हिताय नियोजित हो।

70 - अधिनायक पैसा

जीने का मन्त्र
उधार नहीं होता
संयम छोड़ा
तो मृत्यु निश्चित है
कर्ज का फन्दा
दसों दिशा से बाँधे
सांसें रोध दे
व्यक्ति समाज देश
कोई न बचे
कर्ज चुकाना पड़े
कृत कर्म को
स्वयं भोगना पड़े
देहान्तर में
नियम है सृष्टि का
कौन बचाए?
भाजपा न काँग्रेस
वोटतन्त्र ने
बेईमान बनाया
जन गण को
ऋण माफ़ी का जाल
गले में फ़ंसा
ढगता किसान को
स्वयं अधिनायक?

सन्दर्भ – किसान आन्दोलन के सबसे भयानक फलित 'ऋणमुक्ति' के अचिन्तित फ़ैसले हैं । इसके भयंकर दुष्परिणामों का संकेत कुछ सुधिजनों ने दिया भी, किन्तु मीडिया के नक्कारखाने में तूती की तरह अनसुना रह गया। एक समीक्षात्मक रचना।

71- वेण्टीलेटर है कर्ज

सन्दर्भ – अर्थतन्त्र कृषि सापेक्ष रहा होता तो किसान को ऋण ही न लेना पड़ता। न ही अपनी माटी और फसलों में जहरीले कीटनाशक मिलाने पड़ते; और न ही फल-सब्जियों इंजेक्शन से पकाया जाता। किसान को पहले कर्जदार बनाना और फ़िर अपने अस्तित्व की रक्षा में 'कर्जमाफ़ी की माँग' तक ला खड़ा करना ही अमानवीय नृशंषता है शासन-तन्त्र की! यह बिल्कुल एलोपैथी जीवनशैली सम्मत है जो पहले सामान्य जुकाम मो मलेरिया में बदलती है और उसके उपचार के बहाने उसे नए-नए रोग देकर आजन्म गुलाम बनाकर रखती है; वेण्टीलेटर तक लाती है।

मान्यताओं ने
भ्रमित कर दिया
जन मन को
हड़ताल के बल
कर्ज माफ़ी का
आत्मघाती फ़ार्मूला
महाजनों का
सर्वनाश करेगा
अर्थ व्यवस्था
पटरी उतरेगी
सवा सौ कोटि
लाख के कर्ज तले
आजन्म मृत्यु
देहान्तरों बढेगी
कर्ज की राशि
चुकाना ही पड़ेगा
जन गण को
हर कीमत पर
जैसे स्व-कर्म ।
अनमोल भावों का
सरे बाजार
कौड़ियों की दर से
नीलाम होना
देखेगा मेरा देश
रोएगी भारत मां।

72 - प्राण जाए पर

सन्दर्भ - व्यापक पैमाने पर किसानों की आत्महत्याओं ने कृषि सहित सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था पर सार्थक बहस की बजाय ऋण-मुक्ति जैसा भयंकर पापभरा रास्ता चुना। एक समीक्षा।

वचन भंग
परिचय बनेगा
इस देश का
जो माटी के लाल ने
हठ पकड़ी
कर्जमाफ़ी के लिए
प्रचलन में
आएगा दुष्ट कर्म
दुराशाओं
अभिशप्त धरती
अनाथ होगी
जन गण मन का
अधिनायक
जवान व किसान
आन त्यागेगा
दुष्ट गिद्ध नोचेंगे
भारतीयों को
विमर्षणीय मुद्दा
नहीं उपेक्षणीय।

73 - अर्थ : अनर्थ

विमर्षणीय
किसान आन्दोलन
सप्रयोजन
जन गण का भाग्य
सीधा जुड़ा है
परिणामों के साथ
बदले सत्ता
चिर शाश्वत मूल्य
अर्थ-शिकंजा
कीमत लगाता है
इन मूल्यों की
खोते जा रहे मूल्य
अनजाने ही
दोष कौन स्वीकारे?
अर्थ का फन्दा
सभी के गले पर
कस रहा है
कैसे कोई बचेगा
अर्थ के अनर्थ से?

सन्दर्भ - किसानों की बढती आत्महत्याएं और तद्जन्य उबलते आन्दोलन ने मोदी-टीम के सिपहसाल मुख्यमन्त्रियों ने हथियार डाल दिए। कर्ज माफ़ी की घोषणाएं और मृतकों को बढचढकर राहत राशियों का आबंटन चला। धन पाने के लिए पगलाए जन गण मन में मरकर या मारकर धन पाने का यह राज मार्ग बन जाएगा।

74 - अदृश्य मार

कल तक तो
अदृश्य रहकर
चोट करता
सामने आया अर्थ
धार सहित
माटीसुत के काँधे
रख बन्दूक
जैसे झूठ चलता
सत्य के पाँव
विवश है किसान
जीने के लिए
कर्ज मारे दे रहा
उपज मोल
दोहरी चोट देता
राह बनाना
सरकारों का काम
न भटकाए
फ़िर से सत्ता पक्ष
सही न्याय दे
वर्तमान सम्भाले
भावी सँवर जाए।

सन्दर्भ - किसान आन्दोलन के कुछ अनकहे आयाम देखें इस रचना में।

75 - निर्विकल्प

स्व-सम्पोषित
टिकाऊ अर्थतन्त्र
अपेक्षित है
विश्व मानव हित
ठगी न लूट
साध्य न हो साधन
प्रयोजन हो
सबको स्पष्ट मान्य
यही है न्याय
आर्थिक विषमता
व्यवस्था दोष
व्यक्ति फ़ंसे मोह में
अधिमूल्यन
धन पद सत्ता का
उलझा देता
सही का निर्धारण
सर्वसम्मत
एकमात्र हल है
निर्विकल्प हल है।

सन्दर्भ – अर्थ के अधिमूल्यन ने समस्त मानवीय मूल्यों को ढक लिया है। कल तक भारत अपने पूर्वजों तक का ऋण चुकाने हित जीता-मरता था; प्राण जाए पर वचन न जाए जिसकी आन थी; आज उसी माटी का लाडला किसान अपना वचन तोड़ कर ऋण-मुक्ति के लिए मरने-मारने पर उतारू है, और प्रान्तों की सरकारें सत्ता मोह के चक्कर में बढ-चढ कर इस पापकर्म में शामिलहो रही हैं।

76 - सही अर्थ-व्यवस्था

रक्तप्रवाह
जैसे देह के लिए
अर्थव्यवस्था
देश समाज हित
स्वस्थ चाहिए
ऋणों का लेन देन
निर्बाध चले
कानून अनुसार
न्याय व्यवस्था
अपना काम करे
भय या प्रलोभन
बाधा न बने
समर्थ सत्ता पक्ष
जन गण का
विश्वास पाता रहे
मन हर्षाता रहे।

सन्दर्भ – सही अर्थ-व्यवस्था की दिशा का संकेत करती एक और रचना।

तन्त्र सुधार की बजाय ऋण-माफ़ी जैसे तुरता-फ़ुरत राजनैतिक उपाय खतरनाक हैं। एक समीक्षा।

14-6-17

77 - स्वयं से दुखी मन

आग लगना
लण्डन बिल्डिंग में
दुर्घटना है
मानव कृत रहे
या प्राकृतिक
अनगिनत मरें
न हो बदला
न कोई प्रतिक्रिया
जैसे हो जाती
आतंकी के कारण
या सरकारी
दमन के दौरान
दंगे आदि में
दो देशों के युद्ध में!
लड़ता मन
क्यों अपने आप से
स्वयं दु:खी स्वयं से?

सन्दर्भ – शहरी आकाश-चुम्बी भवनों में आग लगना या भूकम्प आदि से भवन के मलबे तले होती सैकड़ों मौतें सिर्फ़ आँकड़े बनकर रह जाती हैं, कहीं जिम्मेदारी तय नहीं होती।

78 - श्रेष्ठ या आतंकी?

'मैं विशेष हूँ'
श्रेष्ठ हुआ सबसे
धन पद में
अधिकार मद में
डिग्री सोच में
विशिष्ठ आचार में
ज्ञान ध्यान में
उपलब्धि मान में
यही विचार
अलगावभाव का
पुष्ट आधार
इसीसे पनपती
अस्वीकृतियां
फ़िर असहमति
विरोध, बैर
और आतंकवादी
भय का चक्र
विद्रोह और युद्ध
साक्षी है इतिहास।

सन्दर्भ – आतंकवाद का जनक अलगाववाद है। किसी एक स्वघोषित पैमाने पर स्वयं को अन्य मानवों से अलग/विशेष मानना ही अलगाववाद है। अब अलगाववाद के इसी पैमाने को समाज के 'महाजनों' पर लागू करें! स्वयं को सबसे श्रेष्ठ मानने या वैसा बनने की होड़ क्या अलगाववाद को प्रश्रय नहीं है? सब मानव एक समान हों, सबको एकसमान अधिकार रहें; यह अगर न्यायमूलक समाज की कसौटि है तो इस मुद्दे पर सोचना ही पड़ेगा।

79 - भाव से संसार

भावाधारित
मानव के सम्बन्ध
सन्तुष्ट होते
मात्र भावों के बल
पैसे से नहीं
पैसा आहत करे
भावनाओं को
आहत भावनाएं
भुलाती भाव
मानवीय मूल्यों का
क्षरण चले
सुदीर्घ समय से
दुष्फल भोगे
व्यक्ति समाज देश
मुश्किल करे
भारत की राहों को
विश्व शान्ति को
कौटुम्बिक भाव को
न्यायकी प्रक्रिया को।

सन्दर्भ – आज की युवा पीढी के सामने ज्वलन्त प्रश्न है, पैसा बड़ा है या प्यार? पैसे के लिए प्यार की कुर्बानी उचित या प्यार के लिए पैसे की?

सन्दर्भ – पुनः पैसा? बार-बार पैसा? क्यों आता है बार-बार सन्दर्भ में? बिना बुलाए, बिना जरुरत के? पैसा सिर चढता है तो प्यार पांवों में आ जाता है; ठोकरें खाता है। मानवमात्र की नैसर्गिक चाहत प्यार है, पैसा शरीर की जरुरत भर चाहिए। प्यार पूरा चाहिए, सदैव चाहिए; जबकि पैसा सीमित चाहिए, सिर्फ़ आवश्यकता पूर्ति हित चाहिए। पैसा आए या न आए ; आदमी काम चला ही लेता है; जबकि प्यार न रहे तो?

80 - पैसा या प्यार?

पैसे से धनी
भावना से निर्धन
बेचारे जन
तलाशते हैं प्रेम
विश्वास, मैत्री
भावप्रधान होता
जीवन क्रम
धन-गर्व से पस्त
दौड़ाता अर्थ
बिना किसी अर्थ के
भावशून्यता
सहज फलित है
सुख कैसे हो?
भावाश्रित है सुख
भ्रमित सोच
गलतियां कराती
सतत भटकाती।

81 - क्यों नहीं हो संवाद?

सन्दर्भ – 'परिवार की बात बाहर न जाए' इस मान्यता में परिवारों में बुजुर्ग, महिलाएं, बच्चे और भिन्न सन्दर्भों में पुरुष भी अन्याय अत्याचार के शिकार बनते रहते हैं। घर घर की कहानी होकर भी यह 'घर की बात' बनकर रह जाती है, क्योंकि सबको अपनी-अपनी इज्जत पर्दे में रखनी है। प्रश्न है कि सोशल मीडिया की इस आँधी में कोई पर्दा टिकेगा भी?

क्यों नहीं करूँ
जन गण से बात
देहधारी हूँ
बेअल्फ़ाज भी नहीं
दर्द साझा है
हमदर्द बनना
विधि सम्मत
मर्यादा समझता
अपनत्व भी
सब साथ साथ हैं
तभी संवाद
तकाजा परस्पर
उभयपक्षी न्याय।

82 - अनवरत चक्र

सन्दर्भ - माटी की यात्रा, माटी में यात्रा, माटी के लिए यात्रा और माटी ही मंजिल!

बदल जाते
सारे खेल खिलौने
दिन बदले
थे वे जान से प्यारे
विस्मृत हुए
नूतन खिलौनों ने
पाया है स्थान
सदैव स-सम्मान
मिट्टी के बाद
शालीयाना डिग्रियां
फ़िर नौकरी
पद-पैसा-सम्मान
पुरष्कार भी
मन को बहलाते
भरमाते हैं
फ़िर छूट जाते हैं
मिट्टी समान
मिट्टी में मिल जाने
नयों को स्थान देने!

83 - गोधन या बोझ?

नहीं करना
हमें खेती किसानी
पैसा नहीं है
अब इस धन्धे में
इंजीनियर!
अब माल कहाँ है?
सीए सीएस
छाप लेंगे नोटवा
काला-सफ़ेद
सारी ट्रिक्स आ जाती
बनो डॉक्टर
या स्कूल अध्यापक
पैसा इज्जत
सब लूट लो यार
गाय खेत में
न इज्जत न पैसा
कोरा आदर्श
मरना बेहतर
पैसा मिलता
मीडिया प्रचार भी!
अच्छा है आत्महत्या!

सन्दर्भ – गोधन को सर्वश्रेष्ठ सर्व उपकारी धन मानने वाली समाज-व्यवस्था के हाथों गाय की यह दुर्दशा हुई, क्योंकि जो माना, उसे जाना नहीं! बिल्कुल वैसे ही जैसे माता-पिता-गुरु को भगवान माना; किन्तु भग्वत्ता को जाना नहीं; फलतः यह तीनों ही भाग्वत सत्ताएं आज उपेक्षित सी वृद्धाश्रमों में कुढती हैं।
किसानों की आत्महत्याएं और 'गो कृषि ग्रामस्वराज्य' का धूल धुसरित सपना तो उसी अज्ञान के फलित हैं।

84 - मारा-मारी!

भरा कलश
चाहतें अभी बाकी
और भर लूँ
अपने लिए सारा
ले लूँ अमृत
मरना नहीं पड़े
न ही माँगना
इतराऊँ भाग्य पे
मुफ़्त में मिला
बेशकीमती माल
छोड़ कैसे दूँ
अगर छलका भी
तो मेरा क्या है?
सरकारी माल की
फ़िक्र हो किसे?
जितना लूट सकूँ
सोचा भी नहीं
कि आसपास सभी
इसी धुन में
छीनाझपटी करें
मारामारी भी
उनकी जद में हूँ
कभी भी मार देंगे!

सन्दर्भ – सबकुछ समेट कर अपने नाम कर लेने की अंधी होड़ चल रही है। जानते हैं सब कि यह अपरिमित संग्रहभोग न इस जनम में सन्तोष देता है, न देहान्तर में शुभ... फ़िर भी भ्रम नहीं छूटता? क्योंकि पैसे-सत्ता को ठीक से जाना-पहचाना नहीं!

85 - शोर में खोते मूल्य

शब्द का शोर
व्यापित चहुँ ओर
टीवी सिनेमा
सोशियल मीडिया
स्कूल कॉलिज
और अपना घर
शोर ही शोर
कौन क्या कह रहा
क्या सुन रहा
कुछ पता न चले
प्रदूषण है
शोर के मलबे में
खोया मानव
खोते जीवन मूल्य
दूषित होते मूल्य!

सन्दर्भ - शब्द को अर्थ देता है उनको आचरण में उतारने वाला मानव। आचरणशून्य शब्द सिर्फ़ शोर बनते हैं। यही शब्द-शोर चौतरफ़ा प्रदूषण फ़ैलाता है; मानव-मष्तिस्क में घर कर लेता है। बाहर की सफ़ाई क्या कर लेगी जब तक सोच गन्दी है। भीतर कूड़ा-करकट जमा है तो बाहर सफ़ाई स्वीकार कैसे होगी?

86 - पिंजरे में

पूरा जीवन
समूची देह यात्रा
पिंजरा बन्द
सीमित घेरे में ही
खेल खिलौने
पढाई व परीक्षा
पास या फ़ेल
शादी बच्चे खुशियां
व्रत-त्यौंहार
प्रोफ़ेशन व्यापार
सच व झूठ
विधि कोर्ट कानून
महायुद्ध भी
जीत हार सहित
वही पिंजरा
निजी देह रूप में
बन्दी चेतना
भ्रम के वश में।
लड़ाई जीत हार

सन्दर्भ – स्वतः सम्प्रेषण-क्षम है यह रचना; अपने सन्दर्भ अन्तर्मन में स्वयं खोजती है। जाँचकर बताएं, शायद आपको अपना ही चेहरा इस दर्पण में दिखाई दे जाए!

87 - शैशवी स्वीकृतियाँ

सन्दर्भ - परिवारों की दर्दीली टूटन के कारण और समस्या निवारण के उपाय तलाशती यह चौका रचना!
20-6-17

स्वीकृतियाँ ही
सुख दे सकती हैं
ज्ञान या तर्क
जीत का मिथ्या भाव
हार का रूप
व्यक्ति को हार जाता
तर्क जीत के!
स्वीकृतियोंपूर्वक
जुड़ते दिल
शिशु-चर्या देख लो
मान जाते हैं
रूठ कर फ़िरसे
प्रसन्नता बाँटते!

८८ - दोगलापन

सन्दर्भ - ममता ने फ़िरहाद हकीम को तारकेश्वर मन्दिर विकासका दायित्व दिया! धार्मिक-समाजिक-राष्ट्रीय आयामों में आश्चर्य से बहसें हुई। मुस्लिम तुष्टीकरण का यह एकदम नया आयाम निकला, वाह दीदी (या वाह ममता बीबी?)

तुष्टीकरण
चरम सीमा पार
हिन्दूद्रोह में
भूली निज मंगल
होश तो आया
पर शर्म कहाँ है?
शातिर चालें
दोगली ब्यानबाजी
तारकेश्वर
मन्दिर नगर में
भेद करके
मूर्ख बनाना चाहे
जन गण को
सब समझते हैं
वोट (अ)नीति को
समझा देंगे तुम्हें
आने दो निर्वाचन।

89 – मान देश का

सन्दर्भ- सड़क-सन्तरी निजलिंगप्पा ने रोगी को बचाने के लिए राष्ट्रपति काफ़िले को रोका।
महामहिम के सुरक्षा काफ़िले ने एम्बुलेंस में सवार गंभीर रोगी के हालात जाने और मुखर्जी महोदय को निवेदन कर दिया।
महामहिम मुखर्जी ने मुस्कुराकर सामान्य सन्तरी के इस मानवीयतापूर्ण आचरण का अनुमोदन किया, मीडिया ने सराहा। लगा कि जननायक का 'प्रथम सेवक' वाला भाव अन्यान्य महाजनों को भी प्रभावित करने लगा है। दूसरी तरफ हामिद अंसारी का 'सुल्तानी मनोभाव' जन गण मन को न भाया, सर्वत्र भर्त्सना हुई।

ये अच्छे दिन
यही सही निर्णय
व्यक्ति बड़ा है
हर पद मान से
साक्षी देता है
कोई निजलिंगप्पा
अधिकार से
रोके राष्ट्रपति को
बचाने जान
एम्बुलेंस में लैट
उस रोगी की
जो पाँच मिनट में
बच भी जाए
जबकि राष्ट्रपति
रुक सकते
मेट्रो उद्घाटन में
देरी करके
एक जान बचाना
महानतम कार्य।

90 - पाक अलग क्यों?

सन्दर्भ – विश्व इस्लामी आतंकियों के खौफ में है। पाकिस्तान अब सबकी गणना में आतंकवादी देश बनकर रह गया है, जबकि भारत का प्रेम और मैत्रीभाव सर्वत्र सत्कारपूर्वक स्वीकृत है। इतना फर्क कैसे आया?

नहीं मानता
भारत से मित्रता
कभी भी पाक
दुश्मनी आधार है
असतित्व का
त्याग दे जो दुश्मनी
तो अलग क्यों?
जन गण है एक
जल वायु भी
सांस्कृतिक प्रवाह
एक पुरखे
भिन्न एक विचार
जिसका मान
आचरण से बने
मानव मूल्य
सर्वत्र सत्कारित
किसे इन्कार?
आचार में भारत
विश्व बन्धु है
भारत का संकल्प
पाक कहाँ अलग?

91 - देने से सुख

सन्दर्भ – इस्लाम ने छीनना सिखाया; अपने पन्थ से भिन्न जनों को मारने का पाठ पढाया। 'बदले की हिंसा जायज' जैसी नैसर्गिक छूट तो अपनी जान बचाने के लिए अन्यान्य मत-पन्थ-देश भी लेते हैं, किन्तु दो सेमेटिकसम्प्रदाय ऐसे भी हैं जो बिना उकसावे की हिंसा को धार्मिक जामा पहनाकर जिन्दा रहते सत्ता सुख और जन्नत में हूरों की सोहबत पाने राजमार्ग मान लिया। पहला पोप-पादरी, दूसरे इस्लामिक पैरोकार! जबकि भारत की संस्कृति समर्पण करना और अकारण देने का सुख बाँटती है।

एकरूप हैं
इस्लाम-पाकिस्तान
पहचान लो
एक ही इलाज है
न टूटे जिद
झूठा अहँकार है
तोड़ना होगा
कपड़े बदल दो
नई देह दो
बहुत बड़ा पुण्य
देह दान है
पाक व मुसल्मान
नया जन्म ले
नाम रूप बदले
संभावना है
संवाद बनने की
सुख मिलेगा
समस्त दुनियां को
मुसल्मान को
इतना समझा दो
'सुख मिले देने से'!

92 – रुका आतंक

सन्दर्भ – खुफ़िया सूचना है कि दिल्ली में सात आतंकी घुस आए हैं, ईद से पहले बड़े विस्फ़ोट की आशंका थी। इसके बाद स्वतन्त्रता दिवस पर भी बड़े आतंकी विस्फ़ोट की स्पष्ट सूचनाएं थी। पूरी दुनियाँ में एक के बाद एक विस्फ़ोट होते हैं, आतंकी घोषणापूर्वक मारकाट कर जाते हैं; पड़ौसी पाकिस्तान में तो गिनती करना ही मुश्किल है; मगर भारत के सुरक्षा-तन्त्र को न भेद सके! क्या अच्छे दिन नहीं हैं?

आशंका जारी
आतंकी विस्फ़ोट की
पूरे देश में
सदैव सर्वत्र है
माने ही नहीं
कोई मुसलमान
अपना रोल
अलग पहचान
वर्ग विशेष
आतंक का कारण
अपवाद भी
खतरे में होते हैं
शान्ति गायब
सच नंगा होकर
सामने आया
सेकूलर वाद का
आतंकी है इस्लाम।

93 - संविधान?

सन्दर्भ – महामहिम श्री तथागत ने ट्विट किया कि भारत में गृहयुद्ध ही इस्लामिक समस्या का हल है, उन्हें गिरफ़्तार करने की चर्चा सोशल मीडिया पर वायरल हुई, जबकि इस्लामिक विद्वान केमरे के सामने जिन्ना बनने, और बटवारे की धमकी देते ही रहते हैं! महामहिम तथागत ने एक आसन्न संकट का इशार भर किया; इसपर भी उनको सजा? यही तो करती रही एलोपैथी और काँग्रेस! अब दोनों अपने पापों के बोझ तले कर्राहते हैं।

बात बात में
गृहयुद्ध का डर
हिन्दू कह दे
तो जेल में डाल दो
भय में देश
दबंग देशद्रोही
दुर्योधनों का
दुर्दान्त अट्टहास
बम गोलों सा
आतंकी विस्फ़ोट की
खबरें मिले
जब तब कहीं से
एक के बाद
दूसरी, बार-बार
सहिष्णु हिन्दू
ठगाता हर बार
दाँव देश का
बन्धन संविधान
कौन बचाए देश?

94 - योग या सेकुलर्जिम?

सन्दर्भ – मोदी विरोध की धुन में बंगाल की यशस्वी मुख्यमन्त्री ममता बैनर्जी नितान्त मुस्लिम पक्षपाती होकर योग और वन्देमातरम जैसे मुद्दों पर भी देश-हितों को दांव पर चढा देती है। जन गण-मान्य नोट-बन्दी और जीसटी का विकास-रोधी विरोध करती हैं। यर रचना उस व्यथा से उतरी।

देश-विदेश
योग की जयकार
उपकृत है
धरती का मानव
मान बढाया
योग ने भारत का
किन्तु घर में
विवादित है योग
नीतीश हो या
ममता मुलायम
मुस्लिम मन
सबको डराता है
वोट बैंक को
कैसे नाराज करें?
नकारा योग
सेकूलर वाद ने
किसे स्वीकारें?
योग या सेकुलिर्ज्म
तय करो भारत।

95 – उलझते प्रश्न

कश्मीर ही क्यों
बंगाल भी समस्या
राजनीति ने
वोट मजबूरी से
बैनर्जी को भी
मुसल्मान बनाया
संस्कृति द्रोह
मजबूरी हो गया
पहचान ही
विवादास्पद हुई
भारतीय की
प्रतिक्रिया में हिन्दू
क्षुब्ध हुआ है
धैर्य चुकता दिखे
कट्टर हुआ
सोच व्यवहार में
मुस्लिम बना
घालमेल चलता
दोनों के बीच
ये दोहरा व्यक्तित्व
भ्रमित करे
उलझता भारत
अनसुलझे प्रश्न।

सन्दर्भ – ममता बैनर्जी के अतिरेकी मुस्लिम प्रेम से एक तरफ प्रदेश के मुस्लिम गुण्डे गाँव-जनपद में गैर-मुस्लिम परिवारों पर हिंसक हमले, लूट, महिला-धर्षण और सम्पत्ति जलाने जैसे अमानवीय घटनाएं अंजाम देते हैं तो दूसरी तरफ हिन्दू समुदाय अपने अस्तित्व की रक्षा में प्रतिकार में हिंसक होने पर बाध्य होता है। स्वभाव से शान्त, सहिष्णु और अहिंसक हिन्दू का यह इस्लामीकरण इस माटी की गन्ध को बदलने और बिगाड़ने वाला साबित होता है। साँस्कृतिक खतरे को रोकना अपेक्षित है।

96 – विलम्बन का पाप

लम्बित कार्य
बेड़ियां बन जाते
गति रोकते
अन्य अवसरों को
छुड़वा देते
नुक्सान कराते
खीज बढाते
रक्तचाप बढाते
चिन्ता क्रोध से
असहज बनाते
असन्तुलन
व्यवहार बिगाड़े
सभी कार्यों में
असफलता लाए
निज विश्वास
डाँवाडोल हो जाए
भ्रमजाल में
लक्ष्य बिखर जाए
महापाप बुलाए।

सन्दर्भ – बाजार तन्त्र जनित भागमभाग में दिनचर्या के नित्य-नैमित्तिक कर्तव्यों के प्रति 'आज नहीं कल, और अभी नहीं बाद में' की दीर्घसूत्री मानसिकता न घर-परिवारों को सहज व्यवस्थित रहने दे रही है और न ही व्यक्ति को सुख के अवसर देती है।

22-6-17

97 - आचरण ही भारत

सन्दर्भ - उत्साह में रचना शुरु की, और तीसरे प्रहर तक मानसिक भावनात्मक आघात से लिखना बाधित हुआ। भावधारा के सकारात्मक होने पर अधूरी रचना को पूरा किया। सुधी पाठक जान लें कि साहित्य की साधना में परिजन मित्रों की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है।

23-6-17

सफलता से
नया उत्साह मिले
नई दिशा में
कदम आगे बढे
हर कदम
नूतन ऊर्जा-जोश
निसर्गगत
सहज सहयोग
न्यायतः मिले
आचरणपूर्वक
जान सकता
अधिकारी मानव
कर लो आचरित!

सन्दर्भ – यौन अपराधों को रोकने में न्याय-कानून व्यवस्था विवश हो रही है। समाजशास्त्रियों, राजनेताओं और नैतिक-उपदेशकों की एक नहीं चलती, अपराध निरन्तर बढ रहे हैं। इसे आधार मानकर बनी यह चौका रचना –

98 - अपरिहार्य

न रोक पाए
बड़े से बड़ा दण्ड
अपराधों को
किसने रोक दिया
नकार कर
बढते इस्लाम को
हर विरोध
नया उत्साह देता
दुष्ट वृत्ति को
रक्तबीज के जैसे
अनगिनत
हो जाते हैं दानव
हर तरफ
कैंसर जैसे फ़ैलें
एलोपैथी से
ज्यादा ही भड़कते
सही निदान
रोगमुक्त करता
पूरा समझो
पहले इस्लाम को
मुस्लिम हो के
अपराधी वृत्ति को
पूरा जान लो
वृत्ति शान्त हो जाती
मिटे कैंसर
नहीं मिले जमीन
रक्तबीजों को
जानो पूरा नियम
यही धर्म है
एकमात्र त्राण है
निर्विकल्प उपाय।

99 - सार्थक व्यस्तता

घर घर में
उपेक्षित बुजुर्ग
किससे कहें
अपनी व्यथा कथा
सुनेगा कौन?
समाधान कहाँ है?
युवा पीढी की
भिन्न प्राथमिकता
आशा कामना
जीने की नई शैली
भागमभाग
बुजुर्ग बैठे ठाले
बतियाने को
सदा व्यग्र बैचैन
यही उल्झन
जेनेरेशन गेप
मिटा सकता
कोई सार्थक काम
जो व्यस्त करे
युवावर्ग से ज्यादा
सुखदायी हो
शिशु-पक्षी-पुष्प
सबको हरषाए।

सन्दर्भ – स्वतः सिद्ध। बुजुर्ग पीढी को समर्पित है यह रचना, क्योंकि सिर्फ़ वही समझेंगे यह वेदना-समाधान।

27-6-17

100 - धरती का आह्वान

सौ रचनाएं
आधे दिनों में पूरी
हर्षित काल
उत्साहित भाव से
आगे बढाता
सहयोगी बनता
नई दिशा से
स्वयं अपनी खोज
सहज होती
सधे जागृतिक्रम
आचरण से
स्वयं पूरा जीकर
विश्व को शिक्षा
भारत का स्वभाव
यह दिव्यता
पुनः प्रवाहित हो
पृथ्वि मां का आह्वान।

सन्दर्भ – इस नई सीखी जापानी काव्य-विधा की शताधिक रचनाएं पचास दिनों में पूरी हुई। रचनाकार का सुख पाठकों के सन्तोषपूर्ण अनुमोदन में है।

28-6-17

101 – पाँव से बड़ा जूता

सन्दर्भ - तेरापन्थ के एकादशाचार्य महाश्रमण को कोलकाता के नव-निर्मित भवन में चातुर्मासिक प्रवेश पर भव्य स्वागत कार्यक्रम में उनको ब्रह्मा विष्णु महेश कृष्ण और राम सहित भारतीय मनीषा के सभी दिव्य मानवों का आरोपण कर दिया गया। साधक को आश्चर्य हुआ कि इस अल्पसँख्यक वर्ग ने अपने वर्ग के 'विशेष' भगवानों ईशा मसीह और मुहम्मद को क्यों छोड़ दिया? एक और आश्चर्य, कि अबोध जन गण की तारीफ़ों को यदि उनके मस्तक का मुकुट माना जाए तो इस मुकुट का आकार प्रकार इतना बड़ा है कि संघ सहित संघपति इस मुकुट में ही छुप जाए! इतने बड़े 'मुकुट' को इन्होंने अपने लिए स्वीकारा कैसे? इस मुकुट के भीतर इनको कोई ढूंढेगा कैसे? शायद इन्होंने स्वयं को 'सन्त' मान लिया है; तो तारीफ या निन्दा को समान मानकर त्यागा और किनारे खड़े रह जाने का आभास दे रहे हैं। नंगे पाँव जानकर श्रद्धालु भक्तों ने कहीं इन तारीफ़ों में 'जूता' तो नहीं परोस दिया? इसमें पाँव रख दिया तो? जूता सम्भालने में हास्यास्पद होकर लड़खड़ाना गिरना अवश्यंभावी है मित्र। यह चिन्मय चौका देखें।

बुरे फंसे हैं
आस्थाशील भक्तों में
महाश्रमण
स्वागत समारोह
भव्य खर्चीला
कदम कदम में
धन बोलता
सिर पे चढकर
सादे वेश को
हास्यास्पद करता
दिखावा भरा
अलँकृत मुकु
माथे से बड़ा
सिर्फ़ मुकुट दिखे
चेहरा ढका
ढूंढते रह जाएं
सुधी जिज्ञासु
इस तामझाम में
साधु सन्तों को
गद्गदाते बेचारे
अनजाने में
पाँव से बड़ा जूता
पहन रहे
चलना कष्टपूर्ण
लड़खड़ाना
और गिरना तय
तेरापन्थ की जय?

102 – काल और अवकाश

(टाईम एण्ड स्पेस)

सन्दर्भ - महाश्रमण का चातुर्मास प्रवेश कार्यक्रम! साध्वीवर्या का संक्षिप्त वक्तव्य महत्वपूर्ण। भगवती सूत्र की चर्चा में सूत्र के प्रारम्भ और अन्त का जिक्र हुआ। अद्भुत प्रकरण, सार्थक शब्द! लगा कि कुछ बहुत कीमती विवेचन सुनने को मिलेगा! किन्तु एकदम से गाड़ी जैसे पटरी से उतर गई, छूट गया दिव्यता भरे अर्थ भरा वह सूत्र फ़िर से उपेक्षित। अर्थ तक पहुँचने से पूर्व ही साधक डाँवाडोल हुआ, और महान गुरु सामने साक्षी बैठे रहे। महान खेद।

जैनागम के
महत्वपूर्ण अंग
भगवदीय
भगवती सूत्र के
हर सूत्र में
चमत्कारिक अर्थ
साध्वीवर्या ने
संकेत भर किया
उत्सुक मन
तत्काल ध्यानमग्न
ताकता रहा
ताकता रह गया
अर्थ खो गया
तोतारटन्ती शब्द
फ़िर छा गए
'यहाँ पर' का अर्थ
'समय' तत्व
एकत्व पाते पाते
पुनः बिछड़े
अनर्थ घटित है
कौन क्या करे?
कुएं भाँग पड़ी है
जय महाश्रमण!

सन्दर्भ – कश्मीर में आतंकवादियों को ढूँढ ढूँढ कर सफ़ाया करने का क्रम इस्लाम पन्थ के ठेकेदार बने मुफ़्ती-मौलवियों को परेशान करता है। उनका 'वर्ग विशेष और दामाद' वाला दर्जा खतरे में आ गया है। कैमरे के सामने साक्षात्कार के दौरान भी उनका यह दर्द अनेक बार प्रकट हो जाता है। एक मौलाना तो चीख ही पड़े "मेरा हक है हिन्दुस्तान पर!" सल्तनत गई पर सुल्तानी है कि जाती ही नहीं! इतना भी नहीं स्वीकार सकते कि मां का हक सन्तान पर होता है; मां के प्रति सेवा-समर्पण का भाव ही शोभा देता है न कि सन्तान अपना हक पूजनीया मां पर जताने का पाप करे। दूसरी तरफ अल्पसँख्यक पारसी-यहूदी हैं; जिन्होंने टाटा, नरीमन बनकर भारत की सेवा की और जननायक की इजरायल यात्रा पर नेतन्याहू की कृतज्ञता पूरी दुनियाँ ने देखी।

5-7-175-7-17

103 - अपनापन

मुस्लिम मित्र
धमकाते स्वर में
चिल्ला ही पड़ा
न किसी के बाप का
ये हिन्दुस्थान
मेरा भी अधिकार
संविधान से
गारण्टी शुदा मिला
सुनकर मैं
हैरान रह गया
घृणा मन में
भरपूर लेकर
अधिकार का
दम खम दिखाना
ग्रन्थ से पाया?
या कृतघ्न है मित्र?
अपनापन
प्यार का प्रतिफल
नेतन्याहू ने
स्पष्ट साबित किया
इज़्रैल यात्रा
कसौटी बन गई
प्रेम अपनत्व की!

सन्दर्भ - उपरोक्त 'अपनापन' भरी घटना को साधक ने एक भिन्न धरातल पर खड़े होकर देखा। आप भी देखें इस रचना में !

7-7-17

104– रक्तबन्धु!

क्यों मुसल्मान
अकारण चिल्लाया
डरा डराया?
आश्वस्त रहो मित्र
भारत भूमि
तेरे बाप-दादों की
जो संयोग से
मेरे पूज्य पूर्वज!
प्रेम फ़ैलाया
समूची धरती में
मित्र बनाए
सर्वत्र स्वीकृत है
योग विधाएं
तुम कहाँ अटके
अलग रहे?
तिरष्कार पा रहे
धिक्कारे जाते
आतंकी कहलाते
पाक नाम को
कलंकित करते
क्या फर्क हुआ?
वही धरा जल्वायु
रक्त बन्धु हो
यशस्वी मोदी के भी
पहचानो स्वयं को!

सन्दर्भ – चतुर मुस्लिम एड्वोकेट शबनम लोन ने कश्मीर मुद्दे पर बहस के दौरान स्वयं को कन्फ़्यूड इण्डियन बताया। स्वाभाविक है; उनको भारतीयता और मानवीयता 'जम्हूरियत' पर भारी पड़ती नजर आई। पौराणिक सत्य पुनः प्रकट हुआ कि विचारों के समुद्र में किसी मेरु समान स्थिर मथानी के गिर्द चलता मन्थन सत्य का नवनीत निकाल ही देता है। यही 'संवाद' है। चलता रहे यह 'सही संवाद'; भारतीयता के साथ मानवीयता का नवनीत निकल ही आना है।

105 - कन्फ़्यूज्ड इण्डियन्स

क्यों बन गए
कन्फ़्यूज्ड इण्डियन
मोदी आते ही
अच्छे भले मुस्लिम?
छोटी बातों को
क्यों वायरल करें?
अलगाव को
क्यों चिपका रखा है?
अल्पसँख्यक
और वर्ग भी तो हैं
सारे सहज
खुशियों में शामिल
इन्हें क्या हुआ?
क्यों दुबलाए जाते?
निजी अतीत
भूत बनके खड़ा
वर्तमान को
संशय से भरता
संशय बने
विनाश का कारण
पाक को देखो
भस्मासुर की मौत
खुद के हाथों
अब भारत नहीं
किसी शक में
वसुधा है कुटुम्ब
प्रेम के बल
अलग क्यों रहते?
तुम हो काफ़िले में!

106 - स्वतन्त्रता

सन्दर्भ – शतक लगने से मिला उत्साह अतिक्रमण की सात्विक प्रेरणा बनता है। यह सृष्टि का नियम है।

अतिक्रमण
प्रमाण बनता है
प्रेमानन्द का
निज पद से आगे
काल से परे
अजानी डगर में
अंधकार में
छलाँग लगाने को
मन मचले
कोई बाधा न माने
सलाह नहीं
न कोई मशविरा
अपनी निष्ठा
अपना ही आह्वान
अपनी रिस्क
अपना ही निर्णय
स्वतन्त्रता है
मानव की सम्पदा
सदा निर्बाध
सहज उपलब्ध
जान लो या मान लो।

शतकीय प्रकाशित पुस्तकें –

1- धोती शतक
2- बाल-गीत विविध शैलियों में दो शतक
3- आनन्द का राजमार्ग जीवनविद्या गीत
4- हम आपके हैं कौन? सिनेमा पहेली
5- मुद्रा-क्रान्ति (हाइकू-शतक; पाँच भाषामें)
6- जीवन-जागृति (कुण्डली-जीवनविद्या)
7- मझ ले जीवन सार (साखी द्वि-शतक)
8- वेदिका-हंसिका (परिवार-शतक)
9- गणेशजी की सूँड (चतुष्पदी-शतक)
10- अरुणोदय (हाइकू-द्वि-शतक)
11- दाँव-पेंच (ताँका-त्रिशतक)
12- शीना-इन्द्रायणी और समाज (कुण्डली)
13- नन्हीं सी उड़ान (सहज द्वि-पदी-2)
14- विश्व विषाद योग (हरिगीतिका- 361)
15- उद्भव, उत्कर्ष और अन्त (90 कुडली)
16- ाधक के पत्र (कुण्डली शतक)
17- परिवार सप्तक (मिश्रित छन्द) - 30

अनुदित साहित्य

1- गळगचिया
2- ाधक के सोरठे (प्रेस में)
3 - एकल कहानियाँ (हिन्दी, अंग्रेजी)
4 - आनन्दिनी मीराँ (सम्पूर्ण रंगीन)